सर्मपण
का
दिव्य दर्पण

दादी जानकी

–: हैदराबाद की हरियाली :–

* ब्रह्माबाबा से पहली बार की मुलाकात –हैदराबाद 1936 *

दादीजी और उनके लौकिक पिताजी को हररोज सुबह में शहर के नजदीक के बागीचे में सैर पर जाने की आदत थी।

एक बार जब वो बागीचे से वापिस आ रहे थे उसी दौरान उन्होंने दादा लेखराज को उनकी तरफ आते हुए देखा। दादीजी के पिताजी छोटी उम्र के होने के नाते वो दादा को नीचे झुककर प्रणाम करने लगे परंतु उन्होंने यूँ करने नहीं दिया। दादी बडे ही निर्दोष भाव से दादा को देखती रही और उन्होंने यह अनुभव किया की दादा की प्रतिभा में एक प्रकार का सूक्ष्म एवम् शक्तिशाली प्रकाशपुंज था जो कि जादूई चमक से भरपुर प्रकंपनों को चहू दिशाओं में बिखेर रहा था। वो एक बहुत ही खुबसूरत पल था जिसमें स्वयं दादीजी दादा के चमकते हुए ललाट से उभरते प्रकाशपुंज में खो ही गई थी......... अचानक एक तीर सा नीकला और उसी पल में बाबा के साथ अलौकिक प्यार का नाता जुट गया। स्वयं के लौकिक परिवार से सहज कुदरती रुप में ही निर्मोहीपन का भाव भी प्रकट हो गया। दादी ने दिल ही दिल में जान लिया,"यही मेरे सच्चे बाबा है, यही मेरे वास्तविक पिता है।"

–: स्व–पुरुषार्थ :–

दादीजी की स्वयं भगवान को ढूँढने की खोज परिपूर्ण हो गई। अपने दिल में उन्होंने यह जान लिया कि मैंने उस एक मात्र सर्वोच्च परमपिता को ढूँढ लिया है। ईस बेहद मूल्यवान रिश्ते को निभाने में उसी दिन से लेकर बडी तीव्रता से उनका ध्यान एकजुट हो गया। हममें से हर एक ने भी परमपिता को पा लेने का अनुभव किया है। अब हमारी जिम्मेवारी है कि ईस जागृति को तरोताजा बनाये रखें ताकि हम भी यह मनभावन रिश्ते को संपूर्णतया निभाने में कार्यरत बने रहे।

* पिता अपने बच्चे के दिलकी पुकार को सुनते हैं..........
ओममंडली – हैदराबाद 1936 *

यज्ञ में हमेशा के लिए रहने आने के पहले दादी बाबा के 'ओममंडली' के सत्संग में जाती रहती थी। एक दिन दादी 'ओममंडली' में पहुँची और उस वक्त बाबा 'ड्रामा' के पाठ को सीखा रहे थे। पहली ही बार ईस प्रकार से यह 'ड्रामा' का पाठ पढाया जा रहा था। क्लास रुम का एक साधारण सा माहौल था जिसमें बच्चे बैन्च पर बैठे हुए थे। उनके समक्ष एक मेज एवम् कुर्सी भी रखी हुई थी। बोर्ड पर 'ड्रामा की साईकिल' का चित्र बनाया हुआ था। वह ईतना अद्‌भुत नज़ारा था जिसमें स्वयं परमशिक्षक अपने महान बुद्धिचार्तुय की झलक दिखा रहे थे!!!

दादी ने उस कमरे में प्रवेश किया और वो पीछे खडी रही थी, लेकिन दादी और बाबा के बीच आँखों ही आँखों में दिल का अद्‌भुत मिलन हुआ। उसी दौरान दादी के मन में एक संकल्प उठा, 'बाबा, मैं आपकी हूँ। मैं आपके पास आई हूँ। अब आपकी बारी है कि आप आकर मेरा स्वागत करो। बाबा, मुझे पुकारो।' दूसरे ही पल बाबा ने दादी को यही कहते हुए उन्होंने पुकारा, 'जनक बेटा (बच्चे), स्वागत हो।' दिल से दिल की बातचीत का सिलसिला चलता रहा, दादी के दिल में दुसरा संकल्प उठा, 'बाबा, अब आपको यहाँ पर मेरे नजदीक आना ही है.....' और बस ईतना ही था !!! दिल की आवाज ने बाबा के दिल को छू लिया और कमरे के पिछले हिस्से की तरफ चलते हुए; बाबा वहीं पर आ पहुँचे जहाँ पर दादी खडी थी। और बाबा ने, दादी को बहुत बहुत प्यार से अपनी बाँहों में समा लिया। वो एक बेहद ही विशेष पल था जिसमें; दादी के दिल में गहरा विश्वास और असीम श्रद्धाभाव स्वयं बाबा के प्रति प्रगट हुआ।

-: स्व-पुरुषार्थ :-

दादी को वास्तविक रुप से कई बार यह अनुभव हुआ कि बाबा किस प्रकार उनके दिल की हर धडकन की आवाज को सुन लेते हैं। वो कई बार महसूस करती हैं कि कुछ भी बोलने की भी जरुरत नहीं है; जबकि बाबा तो सिर्फ एक संकल्प मात्र की दुरी पर होते हैं और जब उनका एक पवित्र और शक्तिशाली संकल्प होता है तो उन्हें यही निश्चय रहता है कि बाबा जरुर परिपूर्ण करेंगे।

यही बात हम हरेक को लागू होती है। जब हम बाबा को दिल के नजदीक रखते हैं; तो वह सिर्फ एक संकल्प मात्र की दुरी पर होते हैं और जब हम शुद्ध एवम् निश्चयात्मक बुद्धि से एक भी संकल्प करते हैं तो बाबा उसका प्रत्युत्तर जरुर देते हैं।

* विशालबुद्धि – हैदराबाद *

दादी का सिर जबसे वो छोटी थी तबसे लेकर बहुत ही बडा रहा हुआ है। शारीरिक द्रष्टिबिंदु से वो सुंदर बात नही थी। दुन्यवी माहौल में यह बात को लेकर लोग काफी हद तक उनकी आलोचना किया करते थे। फिर भी दादी को सिर्फ एक ही संकल्प हमेशा रहता था – 'मैं जो भी हूँ, जैसी भी हूँ; मैं स्वयं भगवान की बहुत ही प्यारी बच्ची हूँ।'

ईसलिए वो सच में एक सुंदर पल था; जिसमें दादी बाबा के पास आई और बाबा ने उनके सिर पर हाथ रखा। बाबा ने उनके चेहरे को बडे प्यार से दुलार किया और बहुत ही प्यार से कहा, 'मीठी बच्ची, अपने सिर का सदा खयाल रखना। यह बहुत बडा है क्योंकि आपके पास ज्ञान रत्नों से भरी हुई विशाल बुद्धि है।

-: स्व-पुरुषार्थ :-

दादी हमेशा यह महसूस करती है कि बाबा का वरदानी हाथ उनके सिर पर है जो कि उन्हें अपनी बुद्धि को स्वच्छ, श्रेष्ठ रखने में और उसको साधारण या व्यर्थ संकल्पों से मुक्त रहने में मदद करता है। वो यह भलीभाँति जानती है कि वह स्वयं भगवान के द्वारा चुना हुआ रत्न हैं और वो सदा उनके साथ ही है।

ठीक ईसी तरह, जब हम शुद्ध एवम् श्रेष्ठ ज्ञान रत्नों को बुद्धि में धारण करके रखते हैं तो हमें यही महसूस होता है कि हम विश्वकल्याण के कार्य करने हेतु स्वयं भगवान के द्वारा चूने हुए रत्न हैं। हम शुद्ध,दिव्य एवम् श्रेष्ठ बुद्धि संपन्न हंस हैं क्योंकि बाबा का साथ सदा हमारे संग है।

Karachi, 30 April 1950: Before leaving for Bharat, BK sisters packing all the luggages.
(LR)Dadi Ishu, Dadi Atmamohini, Dadi Sheel Indra, Meera Behn, Hoor Behn, Anandi Behn, Parvati behn (Mamma's Sister), Dadi Dhyani, Dadi Janki.

करांची का काँरवा

-: करांची का कौंरवा :-

* हर बात में कल्याण को देखने की द्रष्टि - करांची 1934 *

दादी को माताओं और बच्चों की संभाल लेने अर्थ नियुक्त किया गया था और उनको बंगलो में (बेबी भवन) रखा गया था, बजाए उसके कि जहाँ दादी प्रकाशमणी और अन्य दादीयाँ जो कि कुंज भवन में रहा करती थी। ईसलिए दादी ने मम्मा को पूछा,'मैं क्यों यहाँ पर रखी गई हूँ ?' मम्मा ने कहा,'क्योंकि आप जनक हो।' जनक अर्थात् वह जो कि विशेष है (भारतीय शास्त्रों में जनक राजा अपनी खूबीयों को लेकर काफी प्रचलित हुआ करते थे।) जनक वो उस राजा का नाम है जिनकी दो विशेष खूबीयाँ होती थी।

(1) वो देहभान से सदा उपराम रहते थे। (2) वो खुद के राज्य से निर्मोही तथा ट्रस्टी रहने का भाव रखते थे। बाबा ने दादी को कहा था, 'जनक बेटा, आप राजा जनक हो।' बाबा ने उन पर अपने वारिस बेटा होने को अधिकार रखा था। जिसको दादी ने स्वयं के लिए एक स्वप्न (वीझन) के रुप में रखा था। मम्मा ने यही बात का समर्थन करते हुए कहा,'बेटा, आप इसमें भी कल्याण को देख पाओगे।'

उन दिनों में बाबा के सब बच्चें अलग अलग भवनों में विभाजित कर दिये गये थे। वो एक प्रणाली का हिस्सा ही था, कि हर भवन में से हरेक को बारी बारी से बाबा के पास आने का, उनके मुरली क्लास में शामिल होने का और बाबा को देखने का सुनहरा अवसर मिलता था। जहाँ पर दादी रहती थी वहाँ पर मातायें ज्ञान को धीरे धीरे सीखती थी। हर बार दादी जब मुरली सुनने के लिए जाती थी तो वापिस आने पर वो मुरली के ज्ञानरत्नों को उन माताओं को सुनाया करती थी। जिसकी सब मातायें बहुत सराहना करती थी। उसके बाद उन्होंने सबने मिलकर यही तय किया कि वो दादी को ही हर रोज मुरली सुनने के लिए भेज दिया करेंगें ताकि वो बाबा की मीठी शिक्षाओं का खजाना उनके लिए ला सके और वो उन्हें समझने के लिए मदद किया करे। यही वजह से दादी का भाग्य खुलने लगा।

जैसे जैसे वक्त गुजरा, ईसके फायदे प्रत्यक्ष होने लगे। वो मम्मा और बाबा को प्रत्यक्ष रुप में देख पाती थी। उनसे सुंदर द्रष्टि का वरदान और ताझा मुरली को प्राप्त किया करती थी। ईससे दादी का मुरली का अभ्यास और पुनः अवलोकन सहज रीति बढता गया। साथ ही उनका आत्मविश्वास भी द्रढ हुआ; जिससे वो ईश्वरीय ज्ञान को बिना किसी हिचकिचाहट बाँटने लगी। दादी ने यह अनुभव किया कि स्वयं की एक शिक्षिका बनने की नींव मजबूत होती गई।

-: स्व-पुरुषार्थ :-

बाबा के शब्द साकार हुए और दादी ने कई फायदे देखें। उसी दिन से लेकर दादी ने स्वयं को सर्मपित किया और मम्मा एवम् बाबा की आज्ञाओं को बिना किसी भी प्रकार के प्रश्नार्थ और संपूर्ण विश्वास के साथ पालन किया। ईसी तरह यह अनुभव हमें भी लागू होता है। ईतना विशाल परिवार और ईतनी बडी दुनिया में होते हुए भी बाबा ने हमें जहाँ पर भी रखा है; हमारे और अन्य के कल्याण को ध्यान में रखते हुए ही बाबा ने वहाँ रखा है।

* मीठा प्यारा बेटा जो कि एक राजा है - करांची 1939 *

यज्ञ की शुरुआत में जब दादी बाबा को मिली, बाबा ने उन्हें 'जनक बेटा' कहकर पुकारा। जब आप किसी को 'बेटा' शब्द से पुकारते हो तो वह एक प्रकार से बहुत ही प्यार और दुलार की संज्ञा है। बाबा ने कभी भी 'जानकी' शब्द नहीं पुकारा जो कि नारीत्व के रंग से रंगा नाम है। उन्होंने सदा 'जनक' नाम से ही दादी को पुकारा। बाबा ने दादी को सदैव एक बेटे के रुप में ही देखा न कि एक बेटी के रुप में।

-: स्व-पुरुषार्थ :-

दादी को यह अनुभव हुआ कि 'बाबा का उन पर अधिकार है और बाबा के प्रति मेरे गहरे प्यार की वजह

से मैं सदा बाबा को स्वयं के प्रति उम्मीदें रखने देती थी। वो जो कुछ भी मुझे कहे, मैं अवश्य उसे पूर्ण रुप से करुँगी।'

आप भी बाबा के मीठे लाडले बेटे और वारिस हो; एक अैसा बेटे जो मीठे पिता का हाथ थामे हुए चलते हो। आप भी राजा हो। आप भी यह शान महसूस कर सकते हो कि कल्प पहले आप जो भी बने थे उस बात को लेकर बाबा को आप से बहुत सारी उम्मीदें हैं

* सपूत बनो और सबूत दिखाओ - करांची 1940 *

बाबा के बच्चे कई बार बाबा के साथ रुहरुहान करने के लिए करांची में ईकठ्ठे हुआ करते थे। एक अैसी ही रुहरुहान के मिलन के दौरान स्व-पुरुषार्थ के विषय को लेकर किसीने बाबा को यह पूछा कि, 'बाबा को बच्चों से किस प्रकार की अपेक्षायें हैं ?' बाबा ने उत्तर दिया, 'हमेशा यह दो शब्द याद रखना - मुझे सपूत बच्चा बनना है और बाबा के प्रति स्वयं के प्यार एवम् विश्वास का सबूत देना है।'

-: स्व-पुरुषार्थ :-

दादी कभी भी यह दो शब्दोंवाली आज्ञा को भुली नहीं। गुजरते वक्त के साथ साथ दादी स्वयं ही इस बात का सहज ही उदाहरण बन गई की सपूत बच्चा कैसा होता है उन्होंने अथक सेवा के दौरान अपने प्यार एवम् विश्वास के सबूत का हर पल सबको दर्शन कराया।

जब हम बच्चे बाबा की हर आज्ञा को गंभीरता से ग्रहण करते हैं और लगन के साथ उसका वास्तविक जीवन में अभ्यास करते हैं तो हम भी स्वत: हमारे प्यार एवम् विश्वास का सबको दर्शन करा सकते हैं। जब हम सब आज्ञाओं को बिना किसी मेहनत और बेहद आनंद के साथ अपना बना लेते हैं तो हम नूतन संस्कारों का सिंचन कर सकते हैं।

* ज्ञान का विचारसागर मंथन अतिन्द्रिय आनंद की अनुभूति कराता है - करांची *

शुरुआत में बाबा को यह बहुत ही पसंद आता था जब बच्चे ज्ञान का विचारसागर मंथन और अतिन्द्रिय आनंद का अनुभव किया करते थे। ईसीलिए बाबा की मुरली के बाद दादी और दूसरी बहनें आपस में मिलकर बैठती थी ताकि उस पर चिंतन कर सके और बाबा ने जो ज्ञानरत्न सुनाये उस पर मंथन करने के लिए आपस में रुहरुहान किया करते थे। एक बार जब वो ईसी लक्ष को लेकर आपस में बैठे थे और प्यारी रुहरुहान कर रहे थे; उसी समय के दौरान क्लीफटन पर सैर करने के बाद बाबा वापिस आ पहुँचे थे। उन्होंने देखा कि किस प्रकार मुरली के अमूल्य रत्नों का विचारसागर मंथन करते हुए सभी मौज ले रहे थे !! बाबा को बहुत आनंद हुआ और उन्होंने कहा, 'मीठे बच्चे, आओ आप अतिन्द्रिय आनंद में हो। आओ और बाबा के साथ झुला झूलो।' बाबा ने दादी का हाथ थामा और अपने साथ बिठाकर साथ में झुला झूलने का आनंद लूटाया। वो सुनहरी घडीयाँ बहुत ही आनंद की भावनाओं से भरपूर थी !!

-: स्व-पुरुषार्थ :-

यही अनुभव ने दादी के दिल में ईतनी गहरी छाप छोड दी कि जब कभी भी दादी झुला देखती है तो बाबा के साथ झुला झूलते हुए जो अतिन्द्रिय आनंद की अनुभूतियाँ हुई थी वो ही घडीयाँ याद आ जाती है। वो जानती है कि मुरली के महावाक्यों का मंथन करना कितना महत्वपूर्ण हैं और उससे किस प्रकार अतरंगी आनंद की उत्पत्ति होती है !!!

मुरली के महावाक्यों का विचारसागर मंथन करने का यही अनुभव हमारे साथ भी रहे। जब हम विचारसागर मंथन करते हैं तो तुरंत ही बाबा के साथ हमारी नजदीकियाँ बढ जाती हैं और यही अभ्यास हममें हल्केपन और आनंद की भावनाओं को जगाता है।

*याद रखो यह मूल्यवान संगमयुग को और पढाई, पढाई, पढाई!!! – करांची *

एक दिन बाबा ने दादी को देखा, जो कि यज्ञ की शुरुआत होने के 18 मास के बाद ही आई थी और बाबाने कहा, 'बेटा, आप दुसरी दिवाली नहीं देखोगी।' बाबा के ईशारे को पकडते हुए (ड्रामा की साईकल का बहुत जल्द अंत आनेवाला है) दादी ने पूछा, 'बाबा मुझसे जो वक्त छूट गया है उसको गैलप करने के लिए मैं क्या करुँ ?' बाबाने कहा, 'एक दिन में मुरली को दस बार पढो।' ईस बात पर दादी ने सोचा और बहुत ही नशे के साथ कहा, 'बाबा, मैं एक दिन में मुरली को बीस बार पढूँगी।'

बाद में दुसरे 6 मास के दौरान, दिन और रात, दादी के दिल में बस यही खयाल था, 'मुझे समय की रफ्तार को पकडना है, मुझको मेरे छुटे हुए 18 मास के समय का खजाना गैलप कर लेना है।'

दादी अपना सिर दो हाथों के सहारे डेस्क पर रखते हुए सिर्फ 20 मिनिट जितनी नींद कर लेती थी। पूर्ण चंद्रमा के प्रकाश में वो मुरली का पठन, लेखन और अध्ययन के लिए बैठी रहती थी। उन दिनों में मुरली कभी कभी 20 पन्नों की भी होती थी। दादी ने उन सभी मुरलीयों का अध्ययन हर शब्द को लेकर किया। दादी का लक्ष बिल्कुल ही स्पष्ट था। वो यही था 'अगर दुसरी सब दादीयाँ पढाई में आगे बढ रही हैं तो मैं भी क्यूँ नहीं आगे बढूँ और मैं भी क्यूँ नहीं उन सब के जैसी बनूँ?' दादी ने बाबा से मिले हुए ईशारे को सदा अपनी आँखों के सामने रखा। जिसके फलस्वरुप उनका पुरुषार्थ तीव्र गति को प्राप्त करता गया।

–: स्व–पुरुषार्थ :–

तबसे लेकर दादी ने बाद में 101 दिवालीयाँ देखी हैं !! हर दिवाली कुछ अलग ही रही है। कोई भी दिवाली एक समान नही रही हैं। हर साल, दिवाली मनाते हुए दादी यही सोचती है, 'दुसरी दिवाली के बारे में कौन जानता है?' और ईसी तरह वो स्वयं के प्रति यही बात याद दिलाती है कि 'जो कुछ भी करना है, अभी ही कर लेना है – उसका कितना महत्व हैं !!' दादी स्वयं को बहुत ही फूर्त रखती है और ईस अमूल्य ब्राह्मण जीवन का एवम् संगमयुग का महत्तम लाभ लेती रहती है। दादी ईस विषय को लेकर हमारे लिए उत्तम उदाहरण हैं कि : ईस पढाई में चाहे हम कोई भी समय पर आये हो – चाहे पहले या बाद में – हमारी सफलता का आधार हमारी पढाई, अंदरुनी लगन एवम् व्यक्तिगत पुरुषार्थ कितना करते हैं उस पर अवलंबित होता है।

* मीठे शांतिधाम की दुनिया– करांची/हैदराबाद *

एक बार कुछेक बातों के विषय में दादी सोच रही थी और वो उन्हीं बातों के बारे में बाबा से पूछना चाहती थी, लेकिन दादी ने सोचा था कि वो सही समय का ईन्तजार करेगी। खुशकिस्मती से जिस बंगले में वो रहती थी, उसी दिन को वहीं पर बाबा मुलाकात लेने के लिए आये। बाबा बागीचे में हरेक को मिले, ज्ञान खजाना लूटाया और सबको तरोताजा किया। फिर बाबा ज्यों ही विदाय ले रहे थे; अचानक ही वो दादी की तरफ मुडे और दादी को निमंत्रण दिया और कहा, 'बेटा, कार में बैठ जाओ और मेरे साथ चलो।' ड्रामा में यह भी दुसरा बहुत ही अद्‌भुत द्रश्य घटित हो गया !! दादी बाबा के साथ हो ली और जहाँ पर बाबा रहते थे वहाँ पर दोनों ही आ पहुँचे। रातभर बाबा की मीठी शक्तियों में लिपटी हुई – दादी उनके बगलवाले कमरे में ही रही।

दुसरे दिन सुबह में बाबा को मिलने के लिए दादी आई; बाबा ने बहुत ही शक्तिशाली द्रष्टि दी, जिसकी वजह से दादी गहन शांति की अनुभूति में खो गई और उनका दिल संतोष एवम् पवित्र आनंद से भरपूर हो गया। थोडे समय बाद बाबा ने पूछा, 'बेटा, क्या आप कोई प्रश्न पूछना चाहते हो?' दादी सिर्फ मुस्कुराई और कहा, 'बाबा, आप मुझे ईतनी गहरी शांति में ले गये और आपने मुज आत्मा को अपने प्यार के प्रकंपनों से भरपूर कर दिया। अब मेरे दिल में कैसे किसी और प्रश्नों का स्थान रह गया ?'

बाबा ने दादी को उस दिन वरदान दिया, 'यही आपके साथ सदा होता रहे, जो भी आपके सामने आये वो आपसे मीठी द्रष्टि पाते ही; बाबा की मीठी याद से भरपुर हो जाये ताकि उससे वो स्वयं भी भरपुर होने की

अनुभूति करे एवम् उनके सारे प्रश्नों का अंत आ जाये।'

-: स्व-पुरुषार्थ :-

उस दिन से लेकर समस्त विश्व की सेवा करते दादी ने ईस दिव्य वरदान के वास्तविक सबूत का अनुभव किया है। कई आत्मायें अपना अनुभव बताती है कि जब वो दादी के संग में होते हैं तो उन्हें आंतरिक सुकून, शांति और संतोष का अनुभव होता है और उसमें उनके सारे प्रश्न पिघल जाते हैं। यही बात हम सबको लागू होती है। जितना ज्यादा हम गहन शांति और मीठी याद का अनुभव बढाते जाते हैं; उतना ही हम शांतिधाम में खो जाने की अनुभूति महसूस करते हैं और हमारे सारे प्रश्न कहीं पीछे छूट जाते हैं।

* ज्ञान बाँटने का महत्व- कुंज भवन/करांची *

यज्ञ में हमेशा के लिए रहने हेतु आने के पूर्व, बाबा ने दादी को यही निर्देश दिया था कि वो दिन के वक्त के दौरान संगठन में रह सकती हैं परंतु बाद में घर जाकर अपने लौकिक माता पिता के साथ रात्रि घर पर बितानी है। वास्तव में यह व्यवस्था कुछ समय के लिए ही थी फिर भी दादी ने स्वयं की आत्मा और दिल को सिर्फ यज्ञ एवम् यज्ञ की सेवा के लिए ही मशगुल रखा था।

सारा दिन यज्ञ में बीताना, विभिन्न प्रकार के सेवाकार्यो में मदद करना; ईन सबकी वजह से दादी हरेक की नजदीकी मित्र बन गई और सबका दिल जीत लिया। हर रोज शाम के वक्त अपने लौकिक घर वापिस जाते समय; दादी अपने साथ सिलाई काम या कोई दूसरा काम ले जाती थी और घर पर भी यज्ञ सेवा ही करती रहती थी।

लौकिक घर में वापिस जाने पर, विशेष रीति से एक महत्वपूर्ण सेवा करती रहती थी। वो यही थी कि वह अपने ईदगीर्द के पडोस में रहनेवाली कुछेक आत्माओं को बाबा के ज्ञानरत्न सुनाया करती थी। सरल रीति से गहन ज्ञान रत्नों को सुनाने के दादी के तरीके को लेकर वो सभी बहुत ही प्रभावित हुए थे।

आखिरकार, यह सेवा का समाचार बाबा को पहुँच ही गया। कुछेक दिनों बाद मुरली सुनाने के पश्चात् बाबा अपनी संदली पर बैठे हुए थे। बेहद मीठी नजरों से दादी को निहारते हुए, बाबा ने बडे ही प्यार से पूछा, 'बेटा, आज जो ज्ञानरत्न बाबा ने सुनाये; क्या आप उसको दोहरा सकते हो ?' दादी ने हौले से सिर हिलाया और एक सेकण्ड की भी हिचकिचाहट के बिना उन ज्ञान रत्नों के उपर बोलना शुरु कर दिया। बाबा के सामने, दादी ने यह अनुभव किया कि वो उन ज्ञान रत्नों को बहुत ही सुंदर तरीके से पेश कर रही है - उनकी (बाबा की) भावनाओं के साथ और बाबा के वही शब्दों को उन्हीं की तरह - और यह सारा किस्सा उन सभी विशेष घडीयों में से एक और यादगार बन गया।

-: स्व-पुरुषार्थ :-

तब से लेकर, ज्ञान रत्नों को बाँटने में या उन्हें सुनाने के लिए दादी स्वयं को बिल्कुल ही नीडर महसूस करती है; यही जानते हुए कि बाबा ने जो समझाया है उसको ही गहराई से महसूस करते हुए, उनके ईरादों को बरकरार रखते हुए और बाबा के संग में रहते हुए ज्ञान दान करने से ज्ञान बहुत ही शक्तिशाली और स्पष्ट हो जाता है। हम जब दादी के यह तरीके का अनुसरण करते हैं, तो हम भी बाबा के ज्ञान दान करने की सेवा में सफलतामूर्त बन सकते हैं।

Brij Kothi, Mt. Abu (1953): Brahma Baba cutting vegetables with (RL)Dadi Nirmalshanta, Dadi Janki, Hardevi Behn & Dadi Manohar

ब्रीज कोठी की बसंत बहार

-: ब्रीज कोठी की बसंत बहार :-

* मन-बुद्धि की रेखा सदा स्पष्ट रहे *

एक बार दादी ने यह महसूस किया कि कोई फलानां व्यक्ति झूठ बोल रहा है। ईसलिए वो बाबा को यह बात बताने के लिए गई। बाबा बोले, 'बेटा, यह आपका काम नहीं हैं। आपका फर्ज है सिर्फ खुद की आँखो को खुद पर रखना। आप अपने मन की एवम् बुद्धि की रेखा बाबा के साथ जुडी हुई रखो और अन्य किसी भी बात के लिए चिंता न करो।'

-: स्व-पुरुषार्थ :-

अन्य किसी के भी कारोबार में कभी भी दखलअंदाझी न करने के लिए दादी हमेशा स्वयं के प्रति खबरदार रहती है। ईसके बावजूद वो शुभभावना और शुभ कामना के साथ साक्षीद्रष्टा बनकर रहने का द्रष्टिबिंदु बनाये रखती है।

जब हम भी अगर यह अच्छी तरह से समझ लेते हैं कि हकीकत में 'हमारा कारोबार' क्या है और क्या नहीं हैं; तो दुसरों के विषय में कम दखलअंदाझी कर पायेंगे और ज्यादा से ज्यादा स्व-पुरुषार्थ के ऊपर ध्यान दे पायेंगे। ईसका यही अर्थ है कि हम व्यर्थ संकल्पों के बिनजरुरी बहाव को रोक पायेंगे और शुभभावना एवम् शुभ कामना के खजाने का ज्यादा संग्रह कर पायेंगे। ईसके बाद हमारे मन की एवम् बुद्धि की रेखा स्पष्ट रहेगी, बाबा के साथ हमारा संबंध मजबूत बनेगा और विश्वसेवा के प्रति हम बाबा के निमित्त सेवाधारी बन सकेंगे।

* सच्चे यज्ञरक्षक - ब्रीज कोठी 1950 *

करांची छोड देने के बाद तथा माऊन्ट आबू में ब्रीज कोठी में स्थायी होने के बाद; यज्ञ में आजीविका के लिए बहुत ही मर्यादित साधनसंपदा थी। एक बार यही "बेगरी के दौर" में दादी की तबियत नासाज थी और उन्हें आराम की जरुरत थी। स्वयं के कमरे में मेडीटेशन करते वक्त दादी के मन में एक अत्यंत शक्तिशाली संकल्प उत्पन्न हुआ वह यही था कि 'यज्ञ की ईन कठिन परिस्थितियों के दौर में दादी की यज्ञ को किसी भी तरीके से आर्थिक रुप से सहयोग देने की तीव्र ईच्छा'।

यह अनुभव के पश्चात तुरंत ही बाबा को पता चला कि दादी के लौकिक दादा उनसे मिलने की ईच्छा से ब्रीज कोठी के रास्ते पर रवाना हो चुके हैं। बाबा सैर पर जाने के लिए निकलने ही वाले थे; परंतु वो वापिस मुडकर दादी के कमरे की और चल दिये और दादी को यह बात बताने पहुँचे कि उनके दादा वहाँ पर आ रहे हैं। बाबा ने दादी को उनका स्वागत करने को कहा और साथसाथ ऊन्हें वहाँ पर रुकने के लिए निमंत्रण देने को भी कहा। जब दादी के दादाजी आये तब दादी ने उनका स्वागत किया और बडे ही नशे के साथ ऊन्हें बाबा का ज्ञान भी सुनाने लगी। वो यह नया बुद्धिमत्ता संपन्न ज्ञान एवम् नये खयालों से संपन्न बातों को बडी रुचि के साथ स्वीकार कर रहे थे। जब बाबा सैर करके वापिस आये, वो दादी और उनके मुलाकाती से मिलने आये। जैसे ही दादाजी बाबा से मिले; वह बहुत ही आश्चर्यचकित हो गये..... जब ऊन्होंने बाबा के व्यक्तित्व से बेहद अलौकिक प्रकाशपुंज को छलकते हुए देखा। यह मुलाकात बहुत ही प्रभावशाली एवम् शक्तिशाली थी और जब उनके दादाजी उनसे विदाय लेनेवाले थे उस पल उनकी जेब में जो 13 रुपये थे वो बाबा को दिये। बाबा ने उनकी यह भेंट को स्वीकार किया। बाद में शाम ढलने पर आबु रोड से दादाजी ने बाबा को फोन किया और यह बताया कि वो अपने कुछ स्टोक होल्डिंग्स को बाबा के यज्ञ के लिए भेजेंगे। बाबा और दादी खुश हुए तथा उनकी सराहना करने लगे उनकी उदारता का, यह सोचकर कि यह आत्मा को ईश्वरीय ज्ञान की बाते छू गई; जिसकी वजह से ऊन्हें प्रेरणा मिली कि यज्ञ में अपना आर्थिक रुप से सहयोग या अनुदान दुँ।

-: स्व-पुरुषार्थ :-

दादी ने सदैव स्वयं को बाबा के यज्ञ के कल्याण के लिए दिल की गहराईयों से जिम्मेवार समझा। वो जितना और जो कुछ भी हो सके उतना आर्थिक रुप से सहयोग देने का ईरादा उनका रहता था एवम् दुसरों को भी वह वैसा ही करने के लिए अभिप्रेरित करती थी। यही धन्यवाद के भावों के प्रकाश में, हम भी जो प्यार और पालना बाबा के द्वारा प्राप्त करते हैं; हमको भी यह प्रेरणा मिलती है कि कैसे हम यज्ञ के सच्चे रखवाले बनकर रहें।

* अशरीरी बनो – ब्रीज कोठी *

यज्ञ में एक दौर ऐसा भी था जब ब्रीज कोठी में कुछ भी नहीं था, खाने के लिए भी कुछ नहीं था !! वो दिनों को "बेगरी के दौर" से जाना जाता है। बाबा माउन्ट आबू रॉक के नजदीक की टेकरीयों पर बच्चों को अपने साथ सुबह में ले जाया करते थे और हरेक को बहुत ही शक्तिशाली द्रष्टि देते थे। बाबा ने निर्देश दिया, 'अशरीरी बन जाओ; उपराम चले जाओ, फिर आपको कुछ भी न होने की अनुभूति ही नहीं होगी। आप उस अतिन्द्रिय सुख की अनुभूतियों में खो जाओगे। आपको यह महसूस होगा कि आप बाबा के द्वारा यहाँ पर अवतरित हुए हो, आप सिर्फ सेवा के लिए ही यहाँ पर हो।'

उस अनुभव के बाद दादी ने यही लक्ष रखा कि देह और देह की कर्मेन्द्रियों से उपराम – 'मुझे अशरीरी अवस्था का बहुत ही गहन अनुभव विकसित करना है।' उन्हों ने वास्तविक रुप से यह अनुभव किया कि सिर्फ सेवा के लिए "वो उपर से अवतरित" हुई हैं।

–: स्व–पुरुषार्थ :–

जब हम अशरीरी बनने के अभ्यास को विकसित करते हैं तो हमें संपन्नता की अनुभति होती है और यहाँ के अल्पकालीन गुरुत्वाकर्षण की बलशाली सीमाओं का आर्कषण कभी नहीं होता है। सब ईच्छायें आखिरकार समाप्त हो जाती है।

* कितना विश्वास और प्यार– ब्रीज कोठी *

एक बार दादी ब्रीज कोठी में बैठी थी। वो बीमार थी और कुछ भी खाने या पीने के लिए अक्षम थी। सुबह में बाबा उनको देखने के लिए आये। पहले उन्हों ने द्रष्टि दी और फिर उसके बाद दादी को लाल केला और मख्खन खिलाया। दादी ने उसको बहुत ही भावना के साथ स्वीकार किया; यही पक्के निश्चय को रखते हुए कि बाबा जो कुछ भी देंगें उसकी ही आवश्यकता उस समय होती हो और सबकुछ ठीक हो जायेगा। यही विश्वास के साथ बाबा को वह खिलाने देती रही और उनको काफी बेहतर होने की अनुभूति भी हुई !!!!!

बाबा उनसे विदाय लेते वक्त यही कहते हुए गये कि वो सैर के लिए बाहर जा रहे हैं। जब बाबा सैर करके वापिस लौटे तो उन्हों ने दादी को कहा,'बेटा, आपको बाब के साथ भोजन स्वीकार करना है।' दादी ने कहा, 'हाँ जी, बाबा !' क्योंकि वो अवश्य यह जानती थी कि बाबा उन्हें जो कुछ भी खिलायेंगें वो एक जादुई दवाई के रुप में काम करेगा।

–: स्व–पुरुषार्थ :–

बाबा हमारा साथी भी है और उसके साथ बाबा हमारे लिए एक सर्जन भी है। दादी को यही विश्वास था ईसलिए उनका अनुभव भी कुछ ईस प्रकार का रहता था। जब हमारा प्यार और विश्वास पक्का हो जाता है तब हम भी बाबा के सहारे – बिमारीयाँ और अन्य कई ऐसी ही मुश्किलातें – मुश्किल परिस्थितियों में से आसानी से आगे निकल जाते हैं।

* मख्खन और आम का फल – हर बच्चे के लिए बाबा की खास दवाई – ब्रीज कोठी *

ब्रीज कोठी में जब कभी भी कोई बच्चा खास करके बीमार होता था; बाबा कहते,'उन्हें मख्खन और

आम खिलाओ।' बाबा यह खुराक ईतना प्यार और शक्ति के साथ देते कि वो एक दवाई का काम कर देता था। दर्दीयों की यज्ञ में संभाल रखने के लिए दादी एक नर्स होने का भी पार्ट बजाया करती थी। बाबा के निर्देशों का पालन करते हुए; दर्दीयों को दादी आम और मख्खन देती थी। एक बार आम और मख्खन दादी बाबा के पास ले आई; यही सोचते हुए कि बाबा उन्हें पहले चखकर देखेंगें। बाबा बोले,'नहीं बेटा, बाबा ने खास यह आपको उस आत्मा के लिए ही लाने को बोला था। यह सिर्फ आम और मख्खन नही है; बल्कि यह तो उस आत्मा के लिए दवाई है।' जो कुछ भी जिस आत्मा को आवश्यक हो; बाबा उसको उस शक्ति से भरपुर कर देते थे। बाबा के यही उदाहरण ने दादी को यह बात सिखा दिया कि जब किसी खास आत्मा के लिए कुछ भी तैयार कर रहे हो तो किस तरह से शुद्ध ईरादा रखना है और साथ में शिवबाबा की याद को भी रखना होता है।

जब ईसी प्रकार दादी दुसरी बार नर्स का पार्ट बजा रही थी; बाबा ने उस वक्त भी आज्ञा दी। जब एक व्यक्ति बीमार थी तो बाबा ने उसके लिए घर में ही बने हुए उपचार को देने का सुझाव दिया जो कि दवाई का काम करे। वो आत्मा उससे संतुष्ट नहीं हुई। उसको यह लगा कि वो घरेलु उपचार की तैयारी जरुरत के मुताबिक नहीं हुई थी ईसलिए वो उसके लिए पर्याप्त नहीं था। बाबा ने कहा, 'बाबा का सलाहसूचन तभी ही काम करेगा जब बच्चे को 100 % उसमें विश्वास हो। अगर बच्चे को यह महसूस होता है कि उसको डोक्टर की जरुरत है तो फिर डोक्टर को आने देना मंजूर है।'

-: स्व-पुरुषार्थ :-

दादी ने यह महसूस किया कि बाबा के यज्ञ का भोजन हीलींग करने के समृद्ध तत्वों से भरपूर होता है। जब भी हम बाबा का भोग या भोजन - पका रहे हैं या उसे स्वीकार करते हैं तो उस वक्त हमें उसके दिव्य शक्ति संपन्न होने की बात को स्वयं की जागृति में रखना है।

(LR) Dadi Chandramani, Dadi Ratanmohini, Didi Chakradhari, Brahma Baba, Dadi Gulzar, Didi Manmohini, Dadi Janki & others.

अमृतसर का अमृत कलष

-: अमृतसर का अमृत कलष :-

* बाबा के स्वरुप, लक्षण एवम् कर्मो का अनुसरण करना - अमृतसर*

अमृतवेला के बाद में और प्रातः मुरली के पहले - बाबा मुरली के बारे में मंथन किया करते थे। जब एक बार दादी अमृतसर में थी। बाबा ने दादी को कहा, 'मुझे यह विश्वास है कि हर रोज सुबह में आप मुरली का मंथन करते हो।' उस वक्त दादी को यह अभ्यास की आदत नहीं थी। दादी ने कहा, 'बाबा, मुझको सीखना है कि वो कैसे किया जाता है।'

उसके बाद दादी ने बाबा का चेहरा और काल्पनिक प्रतिमा को अपनी आँखों के सामने रखते हुए; अमृतवेला के बाद में और प्रातः मुरली के पहले मुरली पर मंथन करना शुरु किया। वक्त के साथ साथ यही अभ्यास ने बाबा के व्यक्तित्व को ज्यादा से ज्यादा वर्से के रुप में प्राप्त करने में दादी को मदद की।

-: स्व-पुरुषार्थ :-

यही शिक्षा हमें भी लागू होती है। हर रोज अमृतवेला के बाद में हम बाबा का चेहरा और उनकी प्रतिभा को स्वयं के सामने रखकर, उनके ही संग में मुरली का मंथन कर सकते हैं। ईस तरह हम मुरली पर विचार सागर मंथन करने का - बाबा के संस्कार का वर्सा प्राप्त कर सकते हैं एवम् उनके फरिश्ता स्वरुप व्यक्तितव को भी स्वयं में समा सकते हैं।

* साक्षी द्रष्टा बनना एवम् सकाश देना - अमृतसर*

एक बार दादी जब अमृतसर में थी तब बाबा वहाँ की मुलाकात लेने आये थे। एक माताजी जो उसके परिवार के सदस्यों के साथ जो कुछ भी हो रहा था, जो कि ज्ञान में नहीं थे उस बात को लेकर बहुत ही दुःखी थी। वो माताजी जब बाबा के पास आई, बाबा उनसे मुलाकात के लिए उसके पास बैठे। बाबा से उसकी मुलाकात संपन्न हो जाने के बाद, उस माता के दुःख को देखते हुए दादी बाबा के पास गई और उनसे पूछा, 'बाबा, क्या मैं कुछ मदद करुँ ? क्या मैं कुछ कर सकती हूँ ?' बाबा ने दादी की और देखा फिर कहा, 'कभी कभी, यही बेहतर होता है कि हम सिर्फ अलिप्त रहें - एक साक्षीद्रष्टा - और रहमदिल होकर करुणामयी भावनाओं के साथ कुछ योगदान दे।'

दादी साक्षी होकर देखती रही कि उस माताजी से मुलाकात के बाद शांतिपूर्ण स्थिति में; बाबा कैसे संपूर्णतया निर्मोही रहते हुए वही गहन शांतचित्त मुद्रा में आगे बढते हुए मुरली को सुनाने लगे !!

-: स्व-पुरुषार्थ :-

दादी ने यह समझ लिया और दो महत्वपूर्ण पाठ को जीवन में अपना लिया:

* हमारे दुन्यवी संस्कार कभी कभी हमें बोलने में और कर्म करने में खींच लेते हैं। लेकिन जब हम भावुक, समझदार और आत्मअभिमानी रहते हैं तो हमारा सबसे पहला प्रतिभाव सकाश देने का हो जाता है जो कि बहुत ही मूल्यवान होता है जब दुसरे लोग दुःख में होते हैं।

* जब हम अन्य दुःखी आत्माओं के दुःख के प्रति साक्षी हो जाते हैं तो किस प्रकार अलिप्त, स्थिर एवम् शांत रहते हैं.... यही हमारे द्वारा सबसे बडी सेवा के रुप में स्वयं को और दुसरों को अनुभव में आती हैं।

जब हम अैसे रुहानी संभाल रखने की रीति को अपनाते हैं तो हम दुसरों की कठिनाईयों की तरफ आ. कर्षित न होते हुए आत्मअभिमानी रह सकते हैं और उन्हें सकाश दे सकते हैं। हमारी निजी शांति हमें सशक्त बनायेगी जिससे योग्य शब्दों एवम् कर्मो द्वारा हम सप्रमाण रुप में सही प्रतिक्रिया दे सकते हैं। यह निर्मोहीपन हमें दुसरे कार्यो के प्रति हमारा ध्यान बनाये हुए रखकर हमें उनको सकाश भी देने में मदद करता है, हम दिनभर में आसानी से आगे बढते रह सकते हैं।

* बच्चों से मिलन मनाने के लिए सदा तैयार- पंजाब/ मधुबन *

दादी पंजाब से बाबा के कुछेक बच्चों को अपने साथ लेकर मधुबन में आई थी ताकि वो सभी पहली बार मधुबन को देख सके। वो सभी शाम को बहुत ही देरी से पहुँचे। हरेक को अपना अपना कमरा मिला और सब स्थायी हुए। उतने में ही दादी तो बाबा को अभिवादन करने के लिए पहुँच गई। दादी को देखते ही बाबा ने एक मीठी मुस्कान के साथ उनका स्वागत किया। दादी ने बाबा को अवगत कराया कि नये बच्चे आये हुए हैं जिनसे बाबा सुबह में ही मिल पायेंगे। बाबा को उन पर ईतना प्यार उमड आया कि उन सबसे वो उसी समय पर मिलना चाहते थे।

फिर बाबा ने उन्हें अपने कमरे में बुलाया और बहुत ही कद्र के साथ उनसे बातें करना शुरु किया। वो यही पूछते रहे कि सफर कैसा रहा, वो सब सामान्य रुप से क्या करते हैं वगैरह वगैरह.....

बाबा को निहारते हुए दादी के दिल को यही सब बातें स्पर्श कर गई कि किसी को भी किसी भी बात के लिए मश्वरा देने के पहले; किस तरह बाबा हरेक आत्माकी व्यक्तिगत स्थिति में भी रुचि रखकर उनसे व्यवहार कर रहे थे !! बाबा से उनकी यह अद्भुत रुहानी चिटचैट सुबह के एक बजे तक संपन्न हुई !! जब उन्होंने वहाँ से विदाय ली तब दादी को बाबा ने कहा,'जब बच्चे यहाँ पर आते हैं; बाबा उनकी सेवा के लिए सदैव हाजिर है। बाबा यह नहीं देखते हैं कि अभी दिन है या रात है !!'

-: स्व-पुरुषार्थ :-

दादी ने खुद यह साक्षी होकर देखा कि जब जरुरत हो तब बाबा बच्चों के लिए समय देने का कितना महत्व होता है। ईसलिए वो हमेशा ध्यान रखती है कि अैसी विशेष सेवा के लिए वो सदा हाजिर रहे। जब भी मौका आये तब बाबा के बच्चों की सेवा करने के लिए हम भी बाबा एवम् दादी के यही उदाहरण का अनुसरण करें। दिन हो या रात का समय उसकी कोई बात नहीं; सेवा के मौके का सही समय पर सही प्रतिभाव देने से हम सबके कल्याण करने के निमित्त बन सकते हैं।

* पाँव में पायल के साथ नाचना - मुंबई, अमृतसर *

दादी जब एक बार मघुबन में थी, उस दौरान बाबा मुंबई में थे। तब दादी ने एक बहुत ही लोकपसंद हिन्दी मूवी के गीत "झनक झनक पायल बाजे" के बारे में बाबा से एक पत्र पाया। वो बहुत ही विशेष गीत था जिसमें सुंदर सूर, ताल और संगीत का अद्भुत समन्वय था। बाबा ने लिखा था, 'बेटा, मैंने यह गीत सुना और मुझे पता है कि सच्चाई में यह गीत तुम्हारे लिए हैं। मेरी जनक, जो कि ज्ञान के घूँघरुँ पाँव में बाँधकर नाचती रहती है और दुसरों को भी नचाती रहती हैं।' फिर बाद में दादी जब अमृतसर, पंजाब में सेवा कर रही थी तब बाबा के ईसी स्वप्न को जो उन्होंने दादी के प्रति पाया था उसको दिल ही दिल में दोहराकर दादी बहुत बहुत पुलकित होती रहती थी। बाबा ने यह भी लिखा था , 'आप "जनक" के नाम से तब पुकारे जाओगे जब आपने 12 अैसी कुमारीयों को तैयार किया हो जो कि बाबा को सर्मपित हो।' उस वक्त दादी बहुत सारी आत्माओं की सेवा के लिए निमित्त बनी थी। हर्ष की बात यह भी थी कि उसमें 12 कुमारीयाँ भी शामिल थी जिन्होंने स्वयं को बाबा के लिए सर्मपित किया और अपना जीवन सेवा के नाम सौंप दिया।

-: स्व-पुरुषार्थ :-

दादी को हर दिन यह नशा रहता है कि ज्ञान के घूँघरुँवाली पायल पाँवों में पहनाकर बाबा उन्हें हर दिन नचाता है; और फिर दुसरों को भी नचाने के काबिल बनाता है। जिससे सबको आनंद और सुख मिलता है।

हम भी जब ज्ञान के घूँघरुँवाली पायल पाँवों में बाँधकर डांस में जुट जाते हैं; बाबा हमें भी याद करते हैं। वो हमसे जिगरी प्यार और दिल की गहराईयों से सम्मान देकर हमसे बात करते हैं।

पूना की पुरवाई

-: पूना की पुरवाई :-

* परखने की शक्ति – पूना 1950 *

सेवा के लिए दादी पूना में थी। उन्होंने वहाँ से बाबा को यह बताने के लिए पत्र लिखा कि बहुत आत्मायें आ रही है और वो सभी ज्ञान को अच्छी तरह से समझ रही है। बाबा ने प्रत्युत्तर दिया। जिसमें बाबा ने यही लिखा था.... 'अैसा असंभव है कि बहुत सारे नये विद्यार्थीयों ने हकीकत में ज्ञान को समझ लिया है।' दादी ने बाबा से फिर पूछा, 'बाबा, मैं यह कैसे जानूँ कि किसने हकीकत में ज्ञान को समझा है ?' बाबा का उत्तर पहेलीनुमा था। उन्होंने कहा, 'बेटा, यह घोषित कर दो कि कल से लेकर यहाँ मुरली क्लास नहीं होगा। सुबह में दरवाजा मत खोलना और फिर देखना कि क्या होता है !!!'

दादी ने बाबा के निर्देशों का पालन किया और क्लास में यह बता दिया कि कल से लेकर यहाँ पर मुरली क्लास नहीं होगा। सुबह में देर तक दरवाजा नहीं खोला और काफी देर के बाद जब उन्होंने दरवाजा खोला तो दादी के आश्चर्य की सीमा न रही क्योंकि एक भाई दहलीज पर ही बैठा हुआ था। दादी ने उनसे पूछा, 'आप यहाँ क्या कर रहे हो ?' उसने जवाब दिया, 'मुझे पता है कि स्थाप्ना का कार्य, मुरली क्लास में पढाई करने के बाद ही होगा। मुरली क्लास के बिना वो कार्य हो ही नहीं सकता। ईसलिए मैं यहाँ पर बैठा हुआ हूँ। मैं मुरली सुनने का ईन्तजार कर रहा हूँ।' दादी ने उसका स्वागत किया और उसके लिए मुरली पढी।

दादी ने सारा किस्सा बाबा को बयान करते हुए लिखा और यही पक्का कराया, 'यही एक बच्चा है जिसने ज्ञान को यथार्थ रीति से समझा है। दुसरों को अभी तक पूर्णतया अनुभूति नहीं हुई है।' ईस प्रकार बाबा ने दादी को परखशक्ति की वृद्धि करने में मदद किया।

-: स्व-पुरुषार्थ :-

बाबा ने दादी को प्रोत्साहित किया कि कैसे बाह्य देखाव से उपराम रहना है और यह जानना सीखाया कि विद्यार्थीयों के दिल में क्या होता है। ईसी समझ के साथ विद्यार्थीयों को ज्ञान किस प्रकार से यथार्थ और योग्य रीति से सुनाने में अपना समय कैसे दिया जाये। उस वक्त से लेकर दादी परखशक्ति की मास्टर बन गई। जल्द ही सच्चाई को देखने तथा आत्माओं को और ड्रामा के सार को समझने में शक्तिमान हो गई। दादी के प्रतिभाव तुरंत ही थोडे बहुत व्यर्थ को नझरअंदाज करते हुए बडी स्पष्टता एवम् सादगी से कैसे निशाने पर तीर लगाया जाये अैसे समर्थ बन गये हैं।

बाबा और दादी के यही उदाहरण हमें प्रेरित करते हैं कि कैसे अपने लक्ष में स्पष्ट रहे, अपने तथा साथी आत्माओं के दिल और दिमाग में क्या रहता है उसकी परख करें एवम् ईस रुहानी ज्ञान के प्रति हमारी प्रतिक्रियायें कैसी होनी चाहिए उसके लिए कैसे मार्गप्रदर्शना करें।

* भावना: दिल से शुद्ध प्यार की भावनायें – पूना, मुंबई 1958 *

कभी कभी बाबा मुंबई की मुलाकात लेने के लिए आ जाया करते थे। पूना जहाँ पर दादी सेवा पर मौजूद होती थी, वहाँ से मुंबई ट्रेन द्वारा पहुँच जाने में करीबन सिर्फ 4 ही घंटे का वक्त लगता था। ईसलिए जब भी दादी को यह समाचार सुनने को मिलता था कि मुंबई की मुलाकात लेने के लिए जानेवाले हैं तो दादी खुद भी पूना से मुंबई जाने की योजना बनाती थी। ईतना उनका बाबा के प्रति प्यार था !!! उतना ही नही परंतु दादी विशिष्ट प्रकार के विभिन्न खाद्य पकवानों को बनाती थी और खास व्यंजनो को भी बाबा के लिए लेकर जाती थी। हर कोई व्यंजन ईतना प्यार और दिल की भावनाओं से बनाया हुआ होता था !! फिर वो ट्रेन द्वारा मुंबई पहुँच जाने 4 ही घंटे की यात्रा के लिए रवाना होती थी। सामान्यतया वो सुबह में 8 बजे पूना से निकलती थी और दोपहर में भोजन के वक्त तक मुंबई पहुँच जाती थी।

बाबा ने दादी के अैसे प्यार को खास भोज्य पदार्थ एवम् व्यंजनो वगैरह द्वारा अभिव्यक्त करने के तरीके को बहुत ही मूल्य प्रदान किया। बाबा खुशी खुशी सब भाईओं और बहनों को निमंत्रण देते थे, यही कहते हुए.. ... 'आज जनक बेटा लंच लेकर आ रही है !! आओ, हमारे साथ उसको स्वीकार करने।'

हर रोज लंच के बाद, दूध में से बनी हुई मीठाई जो कि 'पेंडा' के नाम से जानी जाती है; बाबा उसको ग्रहण किया करते थे। एक बार लंच के बाद, दादी भी बाबा के साथ वहीं उनके कमरे में थी। ईसलिए दादी को भी 'पेंडा' की मीठाई खाने को मिली। दादी ने यह देखा कि किस प्रकार यह छोटी सी मीठाई को बाबा पसंद करते हैं !!! उसी दिन से लेकर दादी ने यह बात हमेशा तय रखी कि हर सतगुरु वार को वही मीठाई बाबा को भोग में अवश्य स्वीकार कराई जाये। अपनी भावनाओं को बाबा के प्रति व्यक्त करने का दादी का यही अनोखा अंदाज था। आज के दिन भी लंडन में, दुसरी मीठाईयों के साथ 'पेंडा' की मीठाई को भी सतगुरु वार को भोग में समाविष्ट की जाती है।

-: स्व-पुरुषार्थ :-

अपनी जिगरी प्यार से भरपूर भावनाओं को बाबा के प्रति व्यक्त करने का एक भी मौका दादी ने कभी अपने हाथ से छूटने नहीं दिया है, उनकी भावनायें और प्यार ईतना महान है !! बाबा के प्रति उनकी ईतनी भावनायें, दिल की असीम गहराईयों से भरपूर हैं !! यही भावनायें उनको बाबा के बहुत बहुत करीब रखती है। उनकी आत्मा के लिए यही अभ्यास गहरे सशक्तिकरण का स्त्रोत बन गई हैं।

दादी के पवित्र प्यार से भरपूर भावनायें हमें भी अैसी ही भावनाओं की अभिवृद्धि करने के लिए और उन भावनाओं की पालना हम करते रहे तथा यही भावनायें बढती ही रहे उसके लिए हमें प्रेरित करती हैं। जब हम ईस अभ्यास को बढाते हैं तो हमारी याद की यात्रा सहज हो जाती है और हम जो भी कर्म करते हैं उसमें हमारा परम साथी हमें हल्केपन का अनुभव कराता है, हमें शक्तिशाली भी बना देता है।

* ड्रामा के रहस्य को याद करना - पूना, मुंबई 1960 *

जब दादी पूना में सेवा के लिए कार्यरत थी उस वक्त उन्हें यह संदेश मिला कि बाबा मुंबई की यात्रा पर जानेवाले हैं और बाद में वह पूना की भी मुलाकात लेनेवाले हैं। यह शुभ समाचार को जानकर दादी को बेहद खुशी हुई; और क्लास के सभी भाईबहन भी रोमांचित हो उठे। दिल के जिगरी प्यार के साथ उन्होंने बहुत सारी टोली बनाई और सेवा के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन भी किया।

फिर भी जिस दिन को बाबा आनेवाले थे, उसी दिन मुंबई में बहुत ही जोरों की बारिश हुई। पूना जानेवाली ट्रेन ही रद्द हो गई। टेलीफोन लाईन्स जो कि उन दिनों यूँ भी बहुत विश्वसनीय नही हुआ करती थी वो बिल्कुल ही काम करना बंद हो गई। कार्यक्रम में किसी भी प्रकार के बदलाव के बारे में दादी और बाबा के बच्चों को पूना में कुछ भी जानने को नहीं मिला।उन्होंने सब कुछ तैयार रखा और ईन्तजार भी जारी ही रखा। परंतु वहाँ पर कोई ट्रेन ही नहीं पहुँची थी और कोई टेलीफोन कोल भी नहीं आया था। आखिरकार, उन्हें पता चला कि बाबा वहाँ पर नहीं आ सकते। वो वास्तव में बाबा के पूनावाले सभी बच्चों के लिए एक प्रकार से परीक्षा ही थी।

दुसरे दिन जब बरसात ने मंजूरी दी, दादी ने मुंबई की ट्रेन पकडी। वहाँ पहुँचने पर दादी का मूड थोडा उखडा हुआ सा था कि कैसे बाबा ने कार्यक्रम को अंतिम पलों में ही बदल दिया था !! बाबा जानी पहचानी मुस्कुराहट के साथ वहाँ बैठे हुए थे। आखिर बाबा ने कहा, 'मैं समझता हूँ कि आपको ड्रामा याद है।' थोडी देर के लिए दादी शांत रही। बाबा ने कहा, 'बेटा, जो कुछ भी होता है, ड्रामा सदैव कल्याणकारी होता है। क्या आपको यह विश्वास है ??' दादी समझने की कोशिश कर रही थी परंतु उनका दिल यही भारी सोच से बोझिल था कि कैसे यह 'ड्रामा' के एक ही शब्द ने उनके प्यारभरे उमंग उत्साह को जिसे उन्होंने हर प्रकार की तैयारीयों में लगाया था उसको ही गायब कर दिया!! कुछ पलों के लिए प्रारंभ में....दादी यही बात को स्वीकार ही नहीं कर पाई। बाबा

ने कहा, 'अगर आप 'ड्रामा' पर विश्वास करते हो तो यह रुहानी यात्रा में वो बहुत ही मदद करेगा।'

दादी ने फिर से बाबा से प्यारभरी द्रष्टि ली। उस पल दादी ने महसूस किया कि 'ड्रामा' सदैव कल्याणकारी होता है जब कि हमें तुरंत ही वह चिन्ह स्पष्ट रीति से चाहे दिखाई न भी दे रहे हो !!

-: स्व-पुरुषार्थ :-

दादी 'ड्रामा' में सदैव विश्वास रखती है और 'फूलस्टोप' (पूर्णविराम) को भी ईख्तीयार करती है। हम भी अैसा करने के लिए प्रेरित होते हैं। 'ड्रामा' में विश्वास रखते हुए हम हल्केपन के साथ आगे बढते रह सकते हैं।

*** द्रढता संपन्न यात्रीओ के लिए पिता का प्यार एवम् सुखद सत्कार - पूना, मधुबन 1958 ***

एक बार पूना से कुछ माताओं को (माननीय, बडी उम्र की मातायें) बाबा से वो मिलन मना सके उसके लिए मधुबन लेकर आने का खयाल आया। यात्रा जरुर लंबीवाली थी। पूना से मुंबई फिर वहाँ से अहमदाबाद और आखिर में आबु रोड तक पहुँचने की लंबी यात्रा तय करनी थी। उस वक्त बारिश का मौसम चल रहा था और माउन्ट आबु के ईलाके में खूब जोरदार बारिश हो रही थी। छोटा सा ब्रीज जो कि माउन्ट आबु पहुँचने से पहले आता है वो भारी बरसात के कारण टूट गया। ईसलिए उस गहरे बहाव के पानी के झरने को पार करने के अलावा मधुबन तक पहुँचने का और कोई रास्ता ही नहीं था।

बाबा ने दादी के यह खयाल को जाना तब उन्होंने दादी और उनके ग्रुप को बहुत ही प्यार के साथ एक संदेशा भेजा। वो यही था, 'मीठे बच्चों अभी मत आओ। ब्रीज टूट गया है; ईसलिए आपको चलकर आना पडेगा जो कि आसान नहीं है।' परंतु दादी और वो सब मातायें बिल्कुल ही कटिबद्ध थी कि जाना ही है। उन्होंने बाबा को लिख भेजा - 'चाहे कुछ भी हो, अगर चलते हुए भी उनको जाना पडे लेकिन हम बाबा से मिलन मनाने जरुर आयेंगे। अब हमें कुछ भी नहीं रोक सकता।' यही द्रढ संकल्प के साथ उन्होंने पूना से आबु रोड की यात्रा की शुरुआत कर दी। आबु रोड पहुँचकर उन्होंने भूरी दादी से मुलाकात की फिर धीरे धीरे चलना शुरु कर दिया। वो अभी तो सिर्फ एक माईल जितना चले ही थे कि उन्हें दूसरे छौर से एक बस मिल गई। जब वो मधुबन पहुँचे तब तक रात्रि के करीब 11 बज चुके थे। काफी देर हो गई थी। फिर भी कितना न मीठा द्रश्य उनका ईन्तजार कर रहा था !!! मधुबन के आँगन में उन सभी का ईन्तजार करते हुए बाबा वहीं पर खडे हुए थे। गर्म पानी के बहुत सारे मटकों एवम् छोटे छोटे टेबल और तौलिये को नजदीक में रखकर; बाबा वहीं खडे थे। यह सब किसलिए था ?? जैसे ही दादी और सब मातायें आँगन में दाखिल हुए....बाबा ने कहा, 'मेरे मीठे बच्चों, स्वागत हो। आप सबका स्वागत हो। आओ, मुझे आपके पाँवो को गरमाहट देने दीजिए; आपके पैरो को मालीश करने दीजिए। आपको जो भी थकान ईतना दूर तक चलकर पहुँचने में हुई है; मैं उसे अभी ही दूर कर देता हूँ।' उन्होंने कहा, 'नहीं नहीं बाबा, आपका प्यार ही काफी है। हम जरा भी थके नहीं हैं। आपसे मिलता हुआ प्रकाश, सकाश और शक्ति सारे रास्तेभर में हमारे साथ ही था।' लेकिन फिर भी उन सभी को बिठाया, उनको सहुलियत दी और आराम पहुँचाया। वो ईतना न सुकून और चैन से भरा आरामदायक अनुभव था कि उन सबकी आँखे आँसुओं से भर आई !!! उनको बस यह एक ही खयाल था: 'बाबा, आपके ईतने महान प्यार का बदला हम क्या करके आपको चुकायें??'

-: स्व-पुरुषार्थ :-

बच्चों की द्रढता के लिए बाबा का ईतना असीम प्यार, आदर-सत्कार एवम् प्रसंशनीय सुश्रूषा को देखते हुए; दादी के दिल में यह द्रश्य बेहद ही स्पर्श कर गया। दादी ने बाबा को साक्षी होकर देखा कि कैसे वो अथक, नम्रता और प्यार से सेवा करनेवाले सेवाधारी हैं !! उसके प्रतिफलस्वरुप वो खुद भी अथक सेवा का जीवंत स्त्रोत बन गई। यह बेहद ही अच्छी बात हैं हमें स्वयं को जाँच करने के लिए कि - 'क्या मैं अपने पिता और दादी का अनुसरण कर रही हूँ ? क्या मेरा प्यार भी नम्रता, संभाल और अथक सेवा से परिपूर्ण हैं ??'

* ज्ञान की खुराक को तैयार करना – पूना *

एक बार दादी जब पूना में थी; तब बाबा वहाँ की मुलाकात लेने के लिए आये थे। अमृतवेला के बाद सुबह में, दादी बाबा के पास दिनभर के कार्यक्रम के बारे में पूछने के लिए गई। बाबा ने बहुत ही गहरी और गहन शांति स्वरुप की स्थिति में दादी से बात की और दादी से कहा, 'बेटा, मैं सब बच्चों की माँ हूँ। वो सवेरे का ही समय होता है जब मैं बच्चों के लिए ज्ञान का मंथन करने बैठता हूँ..... मैं बच्चों के लिए ज्ञान की खुराक बनाता हूँ। सब बच्चों के लिए, सारे दिनभर के योग्य पालना का खजाना – सुबह 5 बजे से लेकर 6 बजे तक बाबा ने जो ज्ञान की खुराक बनाई हुई होती है उसमें से आता है।' यह घटना ने दादी को बहुत ही मीठी मीठी प्यार संपन्न भावनाओं से भर दिया।

उसी दिन से लेकर, दादी ने यही अभ्यास को एक अनुशासन के रुप मे विकसित किया। अमृतवेला के बाद सुबह में, दादी हमेशा ज्ञान का मंथन करती हैं और यह वो ही मंथन होता है जिसको वो अपने क्लास के द्व ारा सबको बताती है। ईसी तरह, दादी ने बहुत ही क्षमता का विकास किया है। यह समृद्ध खुराक को स्वयं के लिए पचाना, उतना ही नहीं ईस खुराक को दुसरों को बाँटने की सेवा में भी लगाना।

–: स्व–पुरुषार्थ :–

जब हम यही अभ्यास को जीवन में अपनाते हैं तो हमें यह पता चलेगा कि ज्ञान के ईन्हीं पोषक संकल्पों से हमारी किस प्रकार से अैसी ही पालना होती है !! हम सारे दिन भर में सश्क्त और सेवा करने योग्य रह पायेंगें एवम् दुसरों की सेवा करके उन्हें भी वैसा ही सक्षम बना पायेंगें।

Mumbai: Along with mamma are Dadi Sheel, Sister Patlu, Devi Mata, Dadi Brijendra, Dadi Janki, Sitting Down are Dadi Santri, Queen Mother & others.

मुंबई की मधुशाला

-: मुंबई की मधुशाला :-

* स्वयं के प्रति भगवान का जो स्वप्न है; उसको निरंतर स्मृति में रखना - मुंबई *

मुंबई में शारीरिक द्रष्टि से दादी बिल्कुल ही ठीक महसूस नही कर रही थी। वो बाल्कनी के पास खडी रहकर सागर की उठती मचलती हुई लहरों को देख रही थी कुछ असमंजस और साधारण रीति के सोच के साथ, यही कि.... "मुझे यह पता नहीं कि मेरा रोल क्या हो सकता है ? मुझे यह भी नहीं पता कि कभी मैं बाबा को सहयोगी बन भी सकती हूँ या नहीं !!? मेरी तबियत तो ठीक नहीं.....!??"

फिर भी, ड्रामा का दुसरा अद्‌भुत द्रश्य उसके तुरंत बाद ही करवट लेने लगा था। दादी ने अचानक ही एक कोमल, प्यारभरे हाथों का स्पर्श अपने कंधो पर महसूस किया। जब दादी ने अपना रुख पलटा यह जानने के लिए कि वह कौन है....!! दादी को तो यह बेहद ही अचरज हुआ जब उन्होंने अपना मुख मोडकर देखा तो स्वयं बाबा को ही वहाँ पाया !! बाबा ने हौले से पूछा, 'बेटा, क्या सोच रहे हो ???' बिना किसी भी प्रकार के उत्तर की अपेक्षा किये, उन्होंने बोलना चालू ही रखा, 'क्या आपको यह याद नहीं है कि आपका भविष्य और भाग्य दोनों ही स्वयं भगवान के हाथों में हैं, और भगवान आपको बहुत ही ऊँची निगाहों से आपको बहुत बहुत ही ऊँचे स्थान और स्थिति के उपर आपको विराजमान हुआ देखते हैं?? सदा यही ऊँचे नशे में ही रहो। भगवान का सबसे ऊँचा स्वप्न (वीझन) जो आपके प्रति हैं उसका कभी अवमूल्यन (अन्डरएस्टीमेट) नहीं करो या कभी उससे नीची बात को सोचो भी नहीं।'

-: स्व-पुरुषार्थ :-

तब से लेकर दादी यही सदा कहती है, "मैं कभी जीवन में पीछे मुडकर देखती नही हूँ और ना ही कभी साधारण या नीचा स्वयं के विषय में सोचती हूँ। मैं सदा यही विश्वास रखती हूँ कि स्वयं भगवान मेरे प्रति सबसे ऊँचा स्वप्न (वीझन) संजोये हुए हैं। दादी को यही महसूस होता है कि यही बात से दादी की बहुत सारी परीक्षाओं को — शारीरिक बिमारी, उम्र का तकाझा और साथ साथ सेवा में बढती हुई जिम्मेवारीयाँ ईत्यादि शामिल हैं — उसमें मदद मिलती हैं और वो साधारण जीवन से तो कहीं दूर निकल आई है !!"

जब भी हमारे दिल और दिमाग में वहम से रंगे हुए प्रश्न उठते हैं तब हम यह कल्पना कर सकते हैं कि बाबा, उस वक्त हमें क्या कह सकते हैं !! जैसा कि उन्होंने दादी को कहा था। अगर हम निरंतर यह स्वप्न (वीझन) को जकडकर रखते हैं जो कि स्वयं भगवान हमारे प्रति रखते हैं तो हम हर प्रकार की परीक्षा में ऊत्तीर्ण हो सकते हैं, संपूर्ण वर्से को गले लगा सकते हैं और हमारे गुणों को विश्वसेवा के लिए बाँट सकते हैं; जैसा कि दादी ने किया।

* शरीर को खिलाने के पहले सेवा करना - मुंबई, हेन्गीग गार्डन *

एक बार मुरली क्लास को ऐटेन्ड करने के बाद, दादी नाश्ता करने के लिए पहुँच गई। उन्होंने अपने लिए नाश्ते की प्लेट ले ली और टेबल के पास लगी कूर्सी पर बैठ गई। ज्यों ही वो चम्मच भरकर पहला ही निवाला मुख में रखने ही वाली थी कि बाबा वहाँ पर आते हुए दिखाई दिये। बाबा ने उनको कुछ ईस प्रकार की नझरों से देखा कि दादी को यह महसूस हुआ कि वो कुछ गलत कर रही है। वो वहाँ से उठ गई और बाबा की तरफ देखने लगी। बाबा ने कहा, 'बेटा, मुख में खाना रखने से पहले; आपने कोई भी प्रकार की सेवा की है क्या ?' यह एक ऐसी घडी थी जिस वक्त दादी ने कर्मो की सुक्ष्म एवम् गुह्य गति के बारे में जागृति आई .....'जब मैं बाबा की निमित्त सेवाधारी हूँ — यह जागृति बनी रहती है और उसी प्रमाण कर्म करते हैं तो फिर जो भी सहयोग बाबा के यज्ञ से मिलता है वो वरदानों के साथ मिलता है।' उस दिन से लेकर मुरली क्लास के बाद दादी हैन्गींग गार्डन में पहुँच जाती थी ताकि वो ज्ञान बाँटने की स्वयं की विशेषता का ईस्तेमाल कर सके। जब वो वापिस आती थी तब ही वो नाश्ता स्वीकार करती थी; वैसा करने पर वो हल्केपन और आनंद का अनुभव करती थी।

-: स्व-पुरुषार्थ :-

उस दिन से लेकर आज दिन तक, दादी ने यही लक्ष रखा है कि "दुसरों को खिलाने के पहले" — यानि दुसरों की सेवा किये बिना वो कभी भी स्वयं को खाना नहीं खिलायेगी। ब्राह्मण आत्माओं को सबसे ज्यादा लाभ तब ही होता है जब हम यज्ञ से पालना लेते हुए दुसरों को स्वयं की विशेषताओं का दान दे। यही अभ्यास हमें भगवान से प्रशंसा प्राप्त करने का अधिकारी बनाता है और साथ ही हमें स्वयं की शान का हल्कापन भी महसूस कराता है।

** सेवा की आधारशिला – भविष्य का स्वप्न (वीझन) दर्शन और विश्वास – मुंबई, 1960 की शुरुआत में **

जब बाबा और दादी दोनों ही मुंबई में थे; तब बाबा ने दादी को पूछा कि क्या वो 'लीथो' मशीन के बारे में जानती हैं जो ि कोपीझ बनाने में काम आता है? बाबा यह मशीन के बारे में रुचि रख रहे थे; क्योंकि उसकी मदद से मुरली की काफी प्रत यानि कोपीझ बना सकते हैं और फिर उसे मधुबन के बाहर के स्थानों पर भेज दिया जा सके। दादी 'लीथो' मशीन का सिर्फ नाम जानती थी; परंतु उससे ज्यादा उनको कुछ पता नहीं था। ईसलिए मुरली को हाथ में थामे हुए वो बाजार की और चल पडी। वहाँ पर, आखिरकार किसीने उन्हें एक दुकान की चौथी मंझिल पर जाने का दिशासूचन किया और वहाँ पर उन्होंने किसीको 'लीथो' मशीन के साथ पाया। दुकानदार ने बिना किसी भी दाम के मुरली की 100 कोपीझ सेम्पल के रुप में बनाकर दादी को दिया। फिर दादी वापिस आई और बाबा को उन्होंने क्या क्या हुआ वह बताया। बाद में, उन्होंने यज्ञ के लिए 'लीथो' मशीन खरीद करने की व्यवस्था की ताकि उसकी मदद से बाबा के नजदीक और दूर के सेवाकेन्द्रों पर सभी को प्रीन्टेड मुरली प्राप्त हो सके।

-: स्व-पुरुषार्थ :-

दादी ने यह सीखा कि जब कभी भी बाबा की सेवा की बात आती है तो जो भी नई नई सुविधायें प्राप्त होती है उसको सीखना एक अच्छी बात ही होती है तथा यह भी विश्वास बनाये रखना होता है कि बाबा की सेवाओं के लिए जो कुछ भी आवश्यक होगा वह समय पर मिल ही जायेगा। उसके साथ साथ आवश्यक सुविध ााओं के लिए आर्थिक अनुदान की भी व्यवस्था हो ही जाती है। यही विश्वास और स्वप्न (वीझन) के साथ दादी को बाबा की सेवा के लिए विश्व सेवा में जादुई तरीके से अनेक अवसर प्राप्त करने के कई अनुभव हुए हैं। आज, बाबा की सेंवा के लिए बहुत ही सक्षम प्रकार की सुविधायें उपलब्ध हैं। हम सबको एक स्पष्ट स्वप्न (वीझन) को बनाकर रखना हैं और समग्र मनुष्य जाति की सेवा के लिए; प्राप्त सर्व साधनों को ईस्तेमाल करने के तरीके भी ढूँढ निकालना हैं।

अहमदाबाद के आँगन में

-: अहमदाबाद के आँगन में :-

* पिताश्री के शुद्ध शब्दों के प्रति प्यार - अहमदाबाद, 1966 *

बाबा के आदेश अनुसार, दादी पूना से अहमदाबाद में नया सेवाकेन्द्र खोलने के लिए आई। बाद में जब वो मधुबन की मुलाकात लेने के लिए गई तब बाबा ने उनको पूछा, 'क्या अहमदाबाद में सब कुछ ठीक है ना ?' नया नया सेवाकेन्द्र होने के कारण धीरे धीरे सब कुछ ठीक हो रहा था और दादी भी ठीक ही थी। दादी ने कहा, 'एक खास चीज की कमी को वो महसूस कर रही है .... वो चीज है बाबा की मुरली को सुनने के लिए टेपरेकोर्डर।' जब से वो पूना में थी तब से हर रोज सुबह में बाबा की मीठी आवाज सुनने की दादी को आदत थी। ईसलिए दादी ने बताया, 'मैं आपको हर रोज मुरली सुनाते हुए नहीं सुन सकती हूँ। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे कि मैं तीसरे नंबर में हूँ।' (उन दिनों में बाबा को यही कहने की आदत थी कि अगर आप मधुबन में बाबा से प्रत्यक्ष रुप में मुरली सुनते हैं तो आप पहले नंबर में हो। अगर आप बाबा की आवाज को टेपरेकोर्डर के द्वारा सुनते हो तो आप दुसरे नंबर में हो और अगर आप सेवाकेन्द्र में मुरली पढते हो तो वह तीसरा नंबर है।) दादी ने कहा, 'बाबा, मैं तीसरा नंबर हूँ।' बाबा ने उन्हें आश्वस्त किया और कहा, 'बेटा, चिंता मत करो। मैं आपके लिए और आपके सेवा केन्द्र के लिए भी अभी अभी टेपरेकोर्डर मँगवाने का ओर्डर दे देता हूँ।' मुरली के प्रति प्यार रखनेवाले बच्चों के प्रति बाबा को कितना सारा प्यार था !!!

दादी ने बाबा को यह भी कहा,'बाबा, मुरली के जो सबसे महत्वपूर्ण शब्द - मीठे बच्चे, मीठे बच्चे - वो ही काट दिये जाते हैं।' मुरली लिखनेवाली व्यक्ति मुरली के कुछ शब्दसमूह को रखता था और बाकी शब्दों को निकाल देता था। ईसलिए बाबा ने तुरंत कहा,'ओके बेटा, ईस विषय पर कुछ किया जायेगा।' जब तक दादी मधुबन से अहमदाबाद पहुँची, उनके सेवा केन्द्र पर पहले से ही टेपरेकोर्डर दादी के लिए ईन्तजार कर रहा था !!! जब दादी को टेपरेकोर्डर मिला तो दादी की दिनचर्या में सब से पहला काम उसके द्वारा मुरली सुनने का हो गया। तब एक और बात दादी के ध्यान में आई। जो भाई मुरली को ओडियो टेप में भरकर भेजता था; वो मुरली को छोटा करने के लिए, बहुत कुछ उसमें से काट दिया करता था। और यह भी कि वो वही शब्द काट दिया करता था जो दादी के लिए बहुत बहुत प्यारे थे। वह शब्द थे - मीठे बच्चे, मीठे बच्चे - वो ही काट दिये जाते थे। दादी ने बाबा को लिखा, 'बाबा, मुरली की जो रेर्कोर्डींग भेजी जाती है; उसमें से शब्दों को काट दिया जाता हैं।' बाबा ने दादी के यह दुःखभरे उद्‌गार की अभिव्यक्ति का प्रतिभाव दिया। उन्होंने चंद्रहास दादा को बुलाया और उनको कहा कि जनक बेटा के लिए बिना किसी भी प्रकार की कापकूप की हुई 'अनएडीटेड' संपूर्ण मुरली ही भेज दी जाये यह ध्यान रहे। बाबा का असीम प्यार और सहारा बच्चों के प्रति देना कैसा होता था,यह दुसरा खूबसुरत उदाहरण था।

-: स्व-पुरुषार्थ :-

वैसे तो दादी जबसे अहमदाबाद में थी तबसे लेकर बहुत कुछ बदल गया है, हम उनके उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं कि कैसे प्रत्यक्ष रुप में बाबा से एवम् सीनीयर्स से प्राप्त हो रही शिक्षा और पालना को हमें कितना महान मूल्य प्रदान करना चाहिए !! जब कभी भी हमें कुछ भी दिलपसंद प्राप्त करना हो तो बाबा के प्रति हमारा सच्चा प्यार ही; बाबा के नजदीक रहने के लिए समय, स्थान का फासला और साधनों से पार होते हुए भी सब संभव कर देता है।

* गुलाब का एक फुल प्यारा है, फूलों का गुलदस्ता और ही प्यारा है ! - अहमदाबाद, 1966 *

जब एक टेक्सटाईल व्यापारी की विधवा ने बाबा के सेन्टर पर शुरु किया था उस वक्त दादी अहमदाबाद में ही थी। दादी तुरंत ही उनको बाबा से मिलाने के लिए मघुबन में लेकर जा पहुँची। उनका नाम 'गुलाब माता' था। वो बहुत ही मीठी और प्यारी आत्मा थी, जब वो बाबा से मिली तो बाबा खुश हुए। बाबा ने दादी को कहा,

'आप गुलाब का एक फुल लाई हो परंतु बाबा को तो पूरा ही गुलदस्ता चाहिए।'

-: स्व-पुरुषार्थ :-

बाबा दादी को यही बात याद दिला रहे थे कि सेवा में कभी भी संतुष्ट होकर बैठ नहीं जाना है और यही विनंती कर रहे थे कि सेवा में हर दुसरे कदम में सदा बेहद का द्रष्य पकडकर रखना। हमें भी सेवा में कभी संतुष्ट होकर बैठ नहीं जाना है परंतु बाबा के सब बच्चें अपने पिता को ढूँढ पाये उसके लिए मदद करने हेतु सदा तत्पर रहना है।

** अष्ट रत्नों में से एक रत्न बनना - (यह कहानी 1950 की शुरुआत के दिनों की है) अहमदाबाद, मुंबई **

आबु में दादी दीवार के सहारे बदन को आराम से सटाकर बैठी हुई मुरली को सुन रही थी। बाबा ने उस तरफ देखा और कहा, 'मेरे वफादार बच्चे यहाँ पर आराम फरमाँ रहे हैं और दुसरे बाहर गये हुए हैं जो कि झूठी कहानीयों को फैला रहे हैं। यह सुनते ही दादी फुर्त हो गई और बाबा को कहा, 'बाबा, मैं मुंबई जाऊँगी और वहाँ आत्माओं की सेवा करुँगी।'

बाबा ने उन्हें अपनी माता के घर जाने के लिए कहा। जबसे उनकी माता यज्ञ को छोडकर अपने दुसरे बच्चों को लेकर चली गई थी; तबसे दादी उनको नहीं मिली थी। बाबा ने उनकी माता को खत लिखते हुए यही कहा, 'बाबा, आपके पास अष्ट रत्नों में से एक रत्न को आपके पास भेज रहा है।' दादी ने कुमारका दादी, जो कि उस वक्त खजानची थी उनसे सिर्फ 5 रुपये लिये और अहमदाबाद पहुँच गई। वहाँ पर दादी ने मंदिर में लोगों को ज्ञान देने हेतु संबोधित किया। अहोभाव से उन्होंने दादी को पूछा कि वो उन्हें कैसे मदद करें; और उन्होंने ही दादी के लिए मुंबई की टिकट का ईन्तजाम कर दिया। दादी अपनी माता के घर पर आ पहुँची जिस दिन उनके लौकिक पिता की बरसी (पूण्य स्मृतिदिन) भी थी। उनकी माँ बहुत खुश हुई। दादी ने भोजन पकाया और अपने लौकिक पिता की आत्मा को भोग भी स्वीकार कराया। छोटी सी बाल्कनी में दादी अमृतवेला करने के लिए बैठती थी और फिर सारा दिनभर बाबा की सेवा के लिए बहार ही रहती थी। सेवा की नींव काम के ईस छोटे से स्थान पर रखी गई।

-: स्व-पुरुषार्थ :-

जब हमारा विश्वास ईश्वरीय ज्ञानरत्नों में संपूर्णतया द्रढ यानि पक्का हो जाता है, जैसे दादी का हुआ; फिर यही एक तमन्ना रहती है कि कैसे हम स्वयं को बाबा की सेवा में कार्यरत रखें और समस्त विश्व की आत्माओं को यह ज्ञानरत्न कैसे बाँटे।

साथ साथ दादी को यह पक्का निश्चय और नशा था कि बाबा का उनके प्रति यही स्वप्न है कि वो वै. जयंतीमाला के अष्ट रत्नों में से एक रत्न बने। यह वरदान ने दादी को मजबूत बनाया यही जानते हुए कि सफलता अवश्यंभावी है।

बाबा का यह स्वप्न है कि हरेक बच्चा विजयी रतन है। दादी हमें प्रेरणा देती है कि हमें वैजयंतीमाला में आने का लक्ष्य रखना है। ईसी पवित्र शब्दों को मन एवम् बुद्धि में पकडकर रखने से हमारी पालना होती है और हममें शक्ति भी आती है। जब हम उसको मन के पर्दे पर देखते रहते हैं तो हम वो ही बन जाते हैं।

Pandaw Bhawan, Mt Abu (1970): Group Photograph of Major Dadis.
Bottom row: (LR) Dadi Dhyani, Dadi Kamal Sundari, Dadi Allrounder, Dadi NirmalShanta, Didi Manmohini, Dadi Prakashmani, Dadi Brijendra, Dadi Pushpashanta, Dadi Janki & Dadi Santri
Top Row: Dadi Ishu, Dadi Shantamani, Dadi Sandeshi, Dadi Gulzar, Dadi Ratanmohini, Dadi Gange, Dadi Mithoo, Dadi Manohar, Dadi Chandramani.

मधुबन की महेंक

-: मधुबन की महेंक :-

* अष्ट रत्नों में से एक रत्न बनना – यही द्रढ निश्चय हो – 1960 के मध्य भाग में हिस्ट्री होल, मधुबन *

हर रोज सुबह में 9 बजे के करीब ब्रह्मा बाबा की नाश्ता करने की दिनचर्या होती थी। उसके बाद वो बच्चों द्वारा आये हुए सारे पत्रों का जवाब लिखने के लिए ओफिस में जाया करते थे। और 10:30 बजे के करीब वो सैर पर जाया करते थे।

एक दिन सुबह में दादी किसी बात को लेकर दादी बाबा से मश्वरा करना चाहती थी। उन्होंने बाबा को यहाँ वहाँ सब जगह पर देखा, परंतु वो कहीं भी न मिले। आखिरकार दादी हिस्ट्री होल तक जा पहुँची। उन्होंने देखा कि खिडकीयाँ अधखुली थी। उत्सुक्तावश दादी ने खिडकीयों से भीतर झाँककर देखा।

दादी ने क्या पाया ? दादी ने देखा वो एक अद्‌भुत और बेनमून द्रश्य था। बाबा !! अकेले अकेले उस कमरे में परमानंद की मस्ती में मस्त मगन होकर नाच रहे थे !! दिल को आनंद की उष्मा से भर देनेवाली लहरें दादी तक उमड आई।यह नझारा देखकर दादी की आँखे भी चमकने लगी और दादी अपने आपको वश में नहीं रख पाई। अतः दादी उस कमरें मे जाकर भाग खडी हो गई और बोला, 'बाबा, आप क्या कर रहे हो ?' वही परमानंद की चूर मस्ती में नाचते हुए बाबा ने उत्तर दिया, 'बेटा, मैं तो नाच रहा हूँ, क्योंकि मैं तो नन्हा-सा, छोटा-सा मीठा क्रिष्ना बननेवाला हुँ !!' जिस नटखटपने के साथ उन्होंने यह कहा, दादी को वह बात बहुत ही गहराई से दिल को छू गई और दादी को भी उसी आनंद के भावो से भरपूर रंग में रंग दिया।

-: स्व-पुरुषार्थ :-

दादी के ईर्दगिर्द चाहे कुछ भी क्यों न हो रहा हो फिर भी दादी वो परमआनंद और नशे से संपन्न स्वयं की शान को कभी भी भुलती नहीं है। उनको यह सदा याद रहता है, 'मैं स्वर्णीमयुगी आत्मा हूँ जो कि स्वयं क्रिष्ना के साथ खेलने, गाने और नाचनेवाली हूँ।' चाहे कुछ भी क्यों न हो जाये, हममें से हरेक ऐसे ही परमानंद और वरदानी स्थिति में सदा स्थित रहें।

* प्रभाव के असर से उपर रहना – जून, 1960 बाबा कीझोंपडी, मधुबन *

एक बार जब बाबा और दादी जानकी एक साथ बैठे हुए थे तब दीदी मनमोहिनी भी आ गई और उनके साथ हो ली। फिर दीदी मनमोहिनी ने किसी के बारे में बोलना शुरु किया और बताया कि वो ठीक नहीं है। जब दीदी मनमोहिनी यह बात को बता रही थी तब उनके चेहरे के भाव भी काफी बदल-सदल हो रहे थे। बाबा ने यह बात को ध्यान में लिया और कहा, 'आपका चेहरा क्यूँ बारबार बदल रहा है ?? कुछ गलत है वो बाबा को यह बताना एक बात है; परंतु उसी गलत बात की वजह से भावुक हो जाना वह दुसरी बात है।' बाबा यही अंगुलिनिर्देश कर रहे थे कि हम कैसे किसी के भी साथ सूक्ष्म रीति से जुड जाते हैं !! उसके बाद बाबा ने दीदी मनमोहिनी और दादी जानकी दोनों ही को यह सलाह दी, 'किसी का भी स्वभाव चाहे कैसा भी हो, उसका कोई महत्व नहीं होता है परंतु हम किसी के भी प्रभाव में न आये।'

-: स्व-पुरुषार्थ :-

भगवान की यह सलाह को दादी ने स्वयं में धारण किया और उसका वास्तविक रुप से अमल भी किया। हम भी यर्थाथ रुप में राजयोगी बने जो कि स्व-अनुशासन, निर्मोहीपन और आत्मअभिमानी होने का अभ्यास करें। उस परमपिता परमात्मा के संग के सिवाय अन्य किसी के भी रंग में नहीं रंग जाये यह बात पर विशेष ध्यान दें।

* संकल्प एवम् शब्दों की एकोनोमी करना – 1960, मधुबन *

दादी ने एक बार बाबा को खत लिखा जिसमें उन्होंने वर्णन किया था कि कोई खास परिस्थिति दादी का ध्यान बारबार अपनी और खींच रही है। थोडे सप्ताह के बाद बाबा से मुलाकात के दौरान, फिरसे दादी ने वही

परिस्थिति का जिकर बाबा को किया। बाबा ने उनकी तरफ देखा और अपना प्रतिभाव दिया, 'बेटा, आपने यह सारी बातें खत में बता दिया है। आपको ईसे दोहराने की जरुरत नहीं है। कुछ बिनजरुरी बातों को दोहराते रहना वो समय, संकल्प और शक्ति को व्यर्थ गँवाना हो जाता है।'

-: स्व-पुरुषार्थ :-

दादी ने तुरंत ही ईस प्रकार की शिक्षा एवम् सावधानी के बहुमूल्य को दादी ने महसूस किया। उसी दिन से लेकर, दादी ने यही पुरुषार्थ किया कि वो अपने दिमाग और शब्दों पर ध्यान रखें तथा बिना किसी स्पष्ट उद्देश्य के वह किसी भी बात को दोहराये नहीं। वो परिस्थिति पर ध्यान देती थी और बाबा को बातचीत के दौरान बता देती थी फिर ड्रामा को याद रखते हुए उस बात को 'पूर्ण विराम यानि फूलस्टॉप' लगा देती थी। ईस तरह वो अपने दिमाग को मुक्त एवम् स्पष्ट रख पाती थी ताकि वो अपना ध्यान योग में और ज्ञान को बाँटने में एकाग्र रह सकें। ईन दिनों दादी यही बात के पाठ को संक्षिप्त में कहती है और बताती है, 'ज्यादा सोचो नहीं।'

अगर हम ईसी पाठ को दिल से स्वीकार कर ले तथा अपने संकल्पों और शब्दों की बचत करें तो हमारे मन एवम् समय को यर्थाथ रीति से ईस्तमाल करते हुए बाबा और दादी के समान बन सकते हैं।

* हाँ जी, निर्मोही और एवररेडी- 1960 की शुरुआत के दिनों में, मधुबन *

एक खास मौके पर बाबा ने जो भी बहनें सेवा में कार्यरत थी उन्हें मधुबन में 5 दिन की रीट्रीट के लिए बुलाया। हर कोई बेहद रोमांचित था क्योंकि लंबे समय से अैसा कोई मिलन नहीं हुआ था। दादी को भी यह मिलन में आने का निमंत्रण मिला था और जब वो आ पहुँची तो उन्होंने भी यही महसूस किया कि वो वास्तव में एक सच्चा मिलन मनाना ही हुआ क्योंकि कई बहनें आपस में एकदुसरे को लंबे समय से देख भी नहीं पाई थी, वह सभी आपस में मिले और साथ में रहने का मौका मिला।

अचानक दादी को यह संदेश आया कि बाबा उनसे मिलना चाहते हैं। दादी बाबा के पास गई। बाबा ने उन्हें बताया, 'बेटा जनक, ग्वालियर की राजमाता (रोयल क्वीन मधर) से हमें अभी अभी निमंत्रण मिला है। मैं सोचता हूँ कि अगर आप उन्होंकी सेवा के लिए ग्वालियर जाओ तो अच्छा रहेगा।'

दादी के लिए वो एक परीक्षा थी क्योंकि दादी ईतनी खुश थी सब बहनों के साथ। दादी ने कहा, 'बाबा, अभी अभी तो मैं आई हूँ और आप कह रहे हो कि मुझे जाना होगा।' वो थोडा सा नाखुश थी। बाबा का चेहरा बदल गया। वो थोडा गंभीर और कडक हो गये। फिर बाबा ने कहा, 'ठीक है, आपको अभी जाने की जरुरत नहीं।' जैसे ही बाबा ने यह कहा, दादी ने यह महसूस किया कि दादी ने बाबा को जो भी कहा; वो न तो सहयोग के रुप में योग्य था और न ही सेवाधारी के रुप से ठीक था। दादी ने कहा, 'बाबा, मैं जाउँगी।' परंतु तब तक तो बाबा बहुत निर्लिप्त हो चुके थे।

दादी ने बाबा को समझाने का प्रयत्न किया और कहा, 'बाबा, मैं जाने के लिए तैयार हूँ। मैं समझती हूँ कि यह महत्वपूर्ण सेवा है।' परंतु बाबा फिर भी शांत, अलिप्त और उपराम रहे। आखिरकार दादी मनमोहिनी के पास गई और उन्हें यह बयान किया कि क्या हुआ था। दादी ने यह स्वीकार किया कि कैसे वो ईस परीक्षा में अनुत्तीर्ण रही। फिर भी उन्होंने स्वयं की महसूसता का अहसास दिलाते हुए, सेवा पर जाने की तैयारी का ही विश्वास दिलाया। बडी दीदी बाद में बाबा के पास गई और दादी की तरफ से उन्होंने बाबा को समझाया। अंत में बाबा मान गये और दादी को रोयल फेमीली की सेवा करने के लिए बहुत बहुत प्यार के साथ अलविदा किया।

दादी तीन दिनों के लिए ग्वालियर गई और बहुत ही अद्भुत सेवा हुई। दादी बताती है कि कैसे जब वो मधुबन वापिस आई तब आज्ञाकारी होने का (सम्मानीय सहयोग देने का) फल कितना मीठा होता है !!! बाबा तो दादी का नाम पुकारने का बंद ही नहीं करते थे !!! सारा दिन यही कहते रहे, 'बेटा जनक, आओ और बाबा के पास बैठो।' 'बेटा जनक, आओ और बाबा के साथ सैर करो।' उन दो दिनों में दादी को ईतना प्यार, ध्यान और

संभाल से भरी कद्रदानी मिली जितना शायद ही किसी और को सारे 5 दिनों के दौरान मिला हो।

-: स्व-पुरुषार्थ :-

ड्रामा के उस छोटे से द्रश्य के द्वारा दादी ने यह समझ लिया कि एवररेडी बनकर बाबा की आज्ञाओं का पालन करने का और हाँ जी, मेरे बाबा (जी हुजूर) करने का कितना फायदेमंद होता है। उन्होंने यह भी देखा कि बाबा किस प्रकार शक्तिशाली रुप में संतुलित रहे। बाबा एक अैसे शिक्षक भी हैं और साथ में वो किस प्रकार संपूर्णतिया प्यारी माँ, बाप और सखा भी है।

ऐवररेडी बनकर बाबा और सीनीयर्स के आदेश और गुजारिश को सहयोग देते हुए उसका पालन करने का और फिर बाद में उनके एक्सट्रा प्यार और वरदानों को पाने का एक आनंदपूर्ण अनुभव होता है।

*** बाबा की मुरली के लिए प्यार- मधुबन, माउन्ट आबू 1951 ***

एक बार दादी की तबियत ठीक नहीं थी और डोक्टर ने उन्हें कहा था कि आपको संपूर्ण आराम की जरुरत है। उनको यही सूचित किया गया था कि उन्हें बिस्तर पर लेटे हुए रहकर आराम लेना है; कमरा छोडकर बाहर नहीं जाना है। शाम होते होते दादी यही बात को लेकर काफी भावुक हो गई और उनकी आँखे गम के आंसुओं से भर आई।

बाबा ने उनकी नाराजगी के बारे में सुना और वह उनके कमरे में यही पूछते हुए आ पहुँचे, 'क्या हुआ और बाबा क्या मदद कर सकते हैं?' दादी ने कहा,'बाबा, मैं आपकी मुरली को नहीं सुन पाऊँगी, डोक्टर ने कहा है कि मुझे संपूर्ण बेड-रेस्ट की जरुरत है।'

बाबा ने दादी का मुरली के प्रति प्यार पहचाना। ईस बात की पुष्टि करते हुए उन्होंने दादी के कमरे में एक स्पीकर तथा क्लास रुम में माईक्रोफोन की व्यवस्था करने के लिए किसी भाई को बता दिया। यज्ञ में अैसा पहली ही बार हुआ कि एक माईक्रोफोन की व्यवस्था हुई और कोई कमरे में एक स्पीकर भी लगवाया गया। उस दिन से लेकर सभी बाबा के साथ रहते हुए एक ही साथ बाबा की मुरली को सुन पा रहे हैं।

दुसरे दिन बाबा ने मुरली सुनाई। बिस्तर पर लेटे हुए रहकर दादी उस मुरली को सुन सकी। फिर भी, बाद में उसी दिन दादी फिर से स्वयं को नाराज महसुस करने लगी और आँसू बह निकले। बाबा उनके पास आये और पूछा, 'क्या हुआ ?' दादी ने कहा,'बाबा, ईस संगमयुग में आप मुरली सुना रहे हो उस वक्त मुझे आपको देखना भी है। मैंने आपको सुना लेकिन मैं आपके मीठे चेहरे पर उठते प्यारभरे हावभाव को तो नहीं देख सकती।' बाबा ने कहा, 'आप क्या करना चाहते हो ?' दादी ने कहा, 'जब आप मुरली सुना रहे हो तब मैं आपको देखना चाहती हूँ और आपसे द्रष्टि लेना चाहती हूँ।' ईस प्रकार से मुरली के प्रति दादी के प्यार को देखकर स्वयं बाबा का दिल भी पिघल गया।

दुसरे ही दिन जहाँ बाबा मुरली बोल रहे थे, उसी होल के दरवाजे के नजदीक में ही एक कुर्सी एवम् छोटा सा बेड भी रखवाया गया था ताकि दादी आराम करते हुए अपने दिल की चाहत को पूर्ण कर सके। ईस प्रकार से मुरली को दादी सुन भी सकी और मुरलीधर की मुरली के संपूर्ण नृत्य का आनंद भी अनुभव कर सकी।

-: स्व-पुरुषार्थ :-

दादी ने बाबा की मुरली को बहुत ही मूल्यवान माना और उसको बहुत ही महत्व दिया। वो संपूर्णतया यह पहचानती और जानती है कि यही सत्य है जिसको वो सदा ढूँढती रही है...... और यही कि मुरली ही दवाई भी है जो रुह को स्वस्थता प्रदान करती है। और यही कि वो उसी दिलबर के द्वारा दिया जा रहा है जिसके लिए उनका दिल तडपता रहता था। उनका यही उदाहरण हममें ईन्हीं भावनाओं को प्रेरीत करता है। हमारे जीवन में सबकुछ हमारी जागृति एवम् एक ही परमशक्ति के साथ हमारे जिगरी रिश्ते पर निर्भर करता है।

* सकाश देना सीखाया – मधुबन (बिकानेर 1950) *

बाबा ने एक बार बिकानेर के रोयल परिवार को ज्ञान सुनाने और रोयल क्वीन मधर की मुलाकात लेने हेतु दादी को बिकानेर भेजा था। दादी जब बिकानेर जा पहुँची तो क्वीन मधर ने उनसे पूछा, 'आप यहाँ किस लिए आये हो ? आपकी मुलाकात का उद्देश्य क्या है ?' दादी ने कहा, 'मैं आपको भगवान के विषय में सुंदर कहानीयाँ बाँटने के लिए आई हूँ।' क्वीन मधर को यह बात बहुत स्पर्श कर गई। उन्होंने कहा, 'सामान्य तौर पर लोग यहाँ मेरे पास कुछ पाने की चाहना से आते हैं। और यह हस्ती आई है जो मुझसे भगवान की विषय कहानीयाँ बाँटना चाहती है !!' उन दोनों की मुलाकात लाजवाब रही। दादी ने उन्हें बाबा का ज्ञान सुनाया और क्वीन मधर बहुत हर्षित हुई। उनकी ईस मुलाकात के बाद दादी मधुबन में वापिस जा पहुँची।

हर रोज की दिनचर्या के मुताबिक, नूमा शाम को मेडीटेशन चल रहा था। हर कोई याद की यात्रा का आनंद लेते हुए संगठन में बैठा हुआ था। बाद में बाबा ने दादी से रुख किया और पूछा, 'आप किसको याद कर रहे थे ?' दादी ने कहा, 'बाबा, मैं आपको और शिवबाबा को याद कर रही थी।' फिर से बाबा ने वही प्रश्न पूछा, 'आप किसको याद कर रहे थे ?' दादी ने फिर से वो ही उत्तर देते हुए कहा, 'बाबा, मैं आपको और शिवबाबा को।' फिर तो बाबा ने सेवा का एक गहरा रहस्य बताया। उन्होंने कहा, 'बेटा, आप अभी अभी वह विशेष व्यक्ति – यानि रोयल परिवार की क्वीन मधर की अद्‌भुत सेवा करके आई हो। आपका अभी फर्ज बनता है कि आप उस आत्मा को सकाश दो; जबकि वो आत्मा ने अभी ही शिवबाबा से संबंध जुटाया है। वो आत्मा आप से जुडी हुई है। आहिस्ता आहिस्ता आप उस आत्मा को आत्मअभिमानी बनने और शिवबाबा से रिश्ता जोडने के लिए मदद करो।'

–: स्व–पुरुषार्थ :–

ईसी तरह, किसी भी आत्मा को बाबा का ज्ञान सुनाने और उनको शिवबाबा का परिचय देने के बाद; दादी ने यह सीखा कि किस प्रकार उस आत्मा को सकाश देना होता है। यही अभ्यास के द्वारा हम भी आत्माओं का सीधा ही शिवबाबा के साथ रिश्ता जोडने में मदद कर सकते हैं।

* सर्व के कल्याण अर्थ सतोगुणी बुद्धि का उपयोग करना *

एक किस्से में दादी बाबा ने बुद्धि के अलग अलग प्रकार के विषय में समझाया। उसके बाद दादी ने बाबा से पूछा, 'बाबा, सतोगुणी बुद्धि क्या होती है ?' बाबा बोले, 'बहुत जल्द ही बाबा, आपको ईसका वास्त. विक उदाहरण देंगें।' थोडे दिनों बाद, दादी ने यह देखा कि किसी फलाने व्यक्ति का व्यवहार कुछ ठीक नहीं था और वो यही बात बाबा को बताने के लिए उनके पास पहुँच गई। बाबा ने कुछ दिनों पूर्व हुए वार्तालाप को याद दिलाते हुए कहा, 'जब आपकी सतोगुणी बुद्धि होती है तो आप दुसरे लोगों की कमी और कमजोरीयों को नहीं देखते हो। आप उसके बारे में बात भी नहीं करते हो उसके विपरीत, आप अपनी सतोगुणी बुद्धि के बल के द्वारा उन आत्माओं को परिवर्तित होने में मदद करते हो।'

–: स्व–पुरुषार्थ :–

दादी ने बाबा के आदेश को अच्छी तरह से समझ लिया है कि 'देखते हुए न देखो' और 'सुनते हुए न सुनो'। बच्चों की गलतीयों को मम्मा और बाबा ने अपनी ही जिम्मेदारी के रुप में देखा एवम् दादी ने भी यही बात उनसे सीखी। दादी बाबा से शक्ति लेकर यही पुरुषार्थ करती है कि दुसरे की कमी को पहले स्वयं में ही ठीक करें। बाद में वो ही शक्ति को प्रगट करती है और बच्चों को एक वरदान के रुप में दान करती है।

ईसी प्रकार से हम भी सबको उनके संपूर्ण और श्रेष्ठ रुप में देखना सीखें। जिसके फलस्वरुप वो खुद भी स्वयं के प्रति यही अनुभव करने के लिए सक्षम बनाता है। यही विधि से आत्मायें अपनी अंर्तनिहित शक्तियों के बारे में अवगत होती है और ईसके आधार पर अपने चारित्र्य को परिवर्तित करने में मदद प्राप्त करती है।

* मुझे मेरा मीठा बाबा समस्त संसार को अवश्य दिखाना है – मधुबन *

अमृतवेले के बाद हर सुबह बाबा के पास जाकर उन्हें सुप्रभात कहकर उनका अभिवादन करने की दादी की आदत रही हुई थी। बाबा अपने बैड पर बैठे हुए होते थे और दादी छोटी–सी पैर रखने की चौकी को वहाँ खींचकर बैठ जाती थी ताकि वो बाबा से द्रष्टि ले सके। दिन की शुरुआत में ही बाबा का अभिवादन करने का वो ईतना अद्भुत तरीका था !! और यही आदत ने दादी के लिए बाबा को कभी भी अपनी आँखों से दूर न होने देने का मजबूत आधार बना दिया। एक ऐसी ही घटना में बाबा के कमरे में दाखिल होने के बाद, दादी ने बाबा को ईतने सारे प्रकाश से भरपूर पाया कि जैसे वो कोई झगमगता हुआ गोला न हो !!! यही विशेष अनुभव दादी के भीतर कुछ ईस तरह घुस गया जिस कारण उन्हें यूँ ही लगा कि वो अतिन्द्रिय सुंदरता और मधुरता का कोई सपना ही न देख रही हो !!! दादी स्वयं को ईतना तकदीरवान महसूस करने लगी कि वो और ही असीम आश्चर्य में खो गई। उनके दिल से यही एक जिगरी तमन्ना उमड आई कि वो बाबा को अपने ही हाथों की हथेलीयों पर रख दें और सारे विश्व को बाबा दिखा दे।

–: स्व–पुरुषार्थ :–

जब भी दादी बाबा के कमरे में वापिस आती हैं, उनको यही अनुभव प्रत्यक्ष रुप में याद आता हैं। बाबा के प्रति यही गहरे प्यार और संबंध ने उन्हें सशक्त बनाया है जिसकी वजह से दादी बाहर जाकर बेहद विश्वमंच के उपर बाबा के प्रकाश एवम् सुंदरता की हकीकत सबको बयाँन कर सकती है। हमें भी यह अवश्य याद रहे और हमें मघुबन में बाबा से प्राप्त हुए हैं यही अनुभवों की मनोमय मुलाकात लेते रहे जिसके फलस्वरुप बेहद सेवा के प्रति हमारा जुनून झगमगाता रहे।

* फरिश्ता बनने की राह पर – मधुबन *

बाबा ने अपने पार्थिव शरीररुपी रथ का त्याग किया; उसके कई महिनों के पहले जून 1968 में दादी ने यह पाया कि खुद की आँखें बाबा को देखने के सिवाय कहीं और हट ही नहीं सकती थी। सुबह में प्रातःकाल के पूर्व ही वो बाबा को सुप्रभात के अभिवादन करने एवम् उनसे द्रष्टि लेने हेतु दौडती हुई पहुँच जाती थी। बाबा के ईदर्गीद ईतना अलौकिक प्रकाश फैला हुआ रहता था !!! ऐसा महसूस होता था मानो कि बाबा अभी अभी वहीं पर थे और फिर भी बाबा वहाँ पर नहीं भी होते थे !!! दादी को यह नझारा देखना बहुत ही आश्चर्य में डाल देता था। हकीकत में वो नझारा अद्भुत होता था।

एक दिन बाबा ने दादी को कहा,‘बेटा, क्या तुम यह जानती हो कि एक समय ऐसा भी आयेगा जिस पल वो फरिश्तारुप बाबा जो ऊपर में रहते हैं वही ईस बाबा के साथ मिलकर एक हो जायेंगा?’ दादी ने यही अनुभव किया; जो कि संपूर्णतया हूबहु वैसा ही हो रहा है। पुरुषार्थी ब्रह्मा बाबा वो ही फरिश्ता रुप बाबा बन रहे थे। बाबा ने फिर दादी की तरफ देखा और कहा,‘आपको भी वैसा ही बनना है जरुर।’

–: स्व–पुरुषार्थ :–

उस दिन से लेकर आज तक दादी ने यही लक्ष रखा है – ‘मुझे बापसमान बनना ही है।’ हम भी यही लक्ष में सहभागी बन सकते हैं और बापसमान बनाने की हमारे बाबा की जो हम बच्चों के प्रति आशायें हैं उनको परिपूर्ण कर सकते हैं।

-: ब्रह्माकुमारी जयंति बहन के उद्‌गार :-

मैं यही आशा करती हूँ कि ईस किताब में जितने भी खजाने लुटाये गये हैं वह आपके अपने जीवन के लिए भी बहुत ही मूल्यवान बन जायेंगे और आप पर सुख, सत्यता और प्यार को बरसायेंगे। दादी के विश्वास की परिभाषा उनके यह अनमोल अनुभवों के द्वारा चरितार्थ हुई है। दादी की यही तमन्ना सदैव बनी रही है कि हरेक उस दिव्य पारलौकिक परमात्मा शिव पिता जो कि हम सब के माता एवम् पिता हैं उनसे शांति, सत्यता और प्यार के स्त्रोत के साथ जुड जायें। जैसे जैसे आप इन अनमोल खजानों पर चिंतनशील बनेंगें; मुझे यह निश्चय है कि आपके अपने संकल्प स्वयं उस पारलौकिक परमात्मा शिव पिता की तरफ बहते चले जायेंगें और आप यही अनुभव करेंगें कि यह सर्व खजानें स्वयं उसी स्त्रोत से हम तक आ पहुँचे हैं।

****